आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902
डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019


शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 13 | उदयपुर सोमवार 15 जुलाई 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

# लोकव्यापी विरह कंठी बारहमासा

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

प्राचीन काव्यों की रूप-परम्परा में बारहमासा संज्ञक रचनाओं की प्रसिद्धि के कई उल्लेख मिलते हैं। बारहवीं शताब्दी से लेकर अब तक लिखे गए बारहमासा काव्य कई रूपों, शैलियों तथा प्रसंगों में जन-व्याप्त रहे। इनमें भक्ति-उपासना एवं आराधनापरक हरजस, इष्ट के प्रति समर्पण लिए भजन तथा प्रेम-प्रसंगों से सिक्त नर-नारी के संयोग-वियोग से जुड़े मनुहार-चिंतार के गीत मुख्य हैं। श्रुत साहित्य की दृष्टि से देखें तो लोककण्ठों पर विभिन्न अंचलों की लोकभाषाओं, वाणियों तथा बोलियों में बारहमासा की बहारें सुनने को मिलती हैं। इस दृष्टि से बारहमासा ऋतु काव्य की सशक्त विधा ही बन गई है। राजस्थान का पीपळी गीत श्रेष्ठतम लोकगीत है। इसमें नायिका बारहों महीनों का माहात्म्य वर्णित करती हुई अपने प्रियतम को नौकरी-चाकरी के लिए बाहर जाने से रोकती है। अन्य प्रांतों में भी यह गीत वहां की आंचलिकता की छाप लिये मिलता है। गीत के प्रारम्भिक बोल ही विरह का वितान देते, सुबकियां भरते पति को यहीं-अपनी प्रियतमा के पास रहने को विवश कर देते हैं-

बाय चल्या छा भंवरजी पीपळी जी
हां जी ढोला होय गई घेर घुमेर
होय गई जोध जवान
होय गई ग्याभण गाय
बिलसण की रूत चाल्या चाकरी जी
हां जी म्हारी सास सपूती रा पूत
मत ना सिधारौ पूरब की चाकरी जी।

प्रियतमा एक-एक कर प्रत्येक माह की खासियत बताती कहती है- **जेठ** माह धूप पड़ै असराळ, हळक पसीजै जीवड़ो ; **आसाढ़** सेजां रा सिणगार ; **सावण** सै सखि हींडण जाय चंपाबाग में जी ; **भादवा** बाजर चढ्यौ निनांण, मोठ बाजरो, चिणांजी ; **आसोज** मूळां में गुड़ै मतीर, सिट्टा चाबल्यां जी ; **काती** घर-घर आयो त्युंहार, लाछ'र लिछमी पूजस्यां; **मिगसर** निपज्यां सात्यूं धान; **पोह** पाळौ पड़ै ए ठंठार, सोड़-पथरवा गींडवा जी ; **माघ** फूल रही बणराय ; **फागण** गहरी उड़ै रै गुलाल, होळी खेलस्यां ; **चैत** घर-घर आई गणगौर, फुलड़ा पूजस्यां जी तथा **वैसाख** घर-घर आई आखातीज, खीचड़ौ जीमसां जी।

मेरे अपने निजी संग्रह में सौ से भी अधिक वर्ष पुराना बारह छन्दों में सन् 1908 में प्रकाशित ख्याल संग्रहीत है जिसका पाठ इस प्रकार है-

आई ऋतु वर्षा की सखि वैरिन दुखदाई।

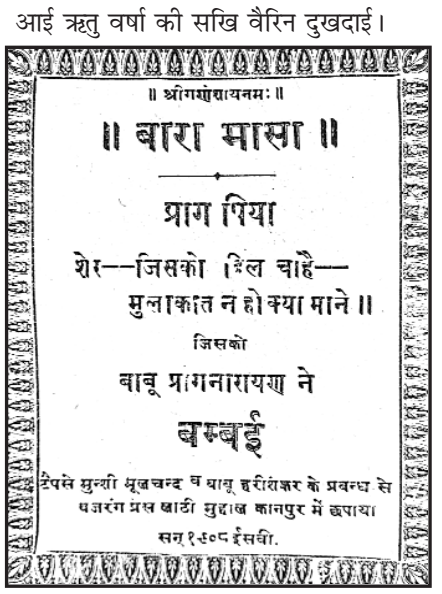


॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ बारा मासा ॥

प्राग पिया

शेर--जिसको दिल चाहै--
मुलाकात न हो क्या माने ॥

जिसको

बाबू प्रागनारायण ने

बम्बई

टैपसे मुन्शी मूलचन्द व बाबू हरिशंकर के प्रबन्ध से
बजरंग प्रेस खाटी मुहाल कानपुर में छपाया।

सन् १९०८ ईसवी.

लाग्यो असाढ़ घटा आई घेर। काले पीले बदरा लगत डर हेर।। करूं कैसी सजनी पिय नहिं तीर। उठत कलेजे विरह केरी पीर।। मिट न मिटाई।। आई।। 1।।
सामन घन गरजत चहुंओर। बोलत कोयल दादुर मोर।।
अरे गात आली सुनूं जब बैन। पड़त न कल दिन नींद न रैन।।
समै की भलाई।। आई।। 2।।
भादों रिमझिम बरसत नीर। बिन मोहन जिय धरत न धीर।।
बढ़े पीर आली पावन लग अंग। दहत अनंग बिना पिय संग।।
करै शत्रुताई।। आई।। 3।।
कुआर गई वर्षा रितु बीत। आई शरद रितु परम पुनीत।।
बिना प्राण प्यारे नहीं चित चैन। दहत शशी दुख देत है भैन।।
उन्हें सौति आई न भाई।। आई।। 4।।
कातिक मास दिवाली होय। खेलैं जुवां पिय संग सब कोय।।
मनावैं खुशी को सबै नर-नार। बनी अभागिन मैं मनमार।।
है कर्म सदाई।। आई।। 5।।
अगहन महेलन पलंग बिछाय। सोवे तिया पिय संग हुलसाय।।
लिपट के गले से बढ़ाय के यार। रूठ गया हम सों करतार।।
कहां है कन्हाई।। आई।। 6।।
पूस पड़े सरदी अति जोर। छायेन जानूं कहां चितचोर।।
न भेजत पाती न आवत तीर। ऐसे भये हैं पिया बेपीर।।
करूं कैसी माई।। आई।। 7।।
माह बसंत सखी गयो आय। विरह अगिन दई लूक लगाय।।
बदन माहि रहैं कित भाज। देखत डर लागत रितु आज।।
करायो चढ़ाई।। आई।। 8।।
फागुन उड़त अबीर गुलाल। मैं कांसो खेलूं बिना नंदलाल।।
जरे गात मेरो करूं कैसी हाय। फाग भयो बैरी मोहिं आय।।
चले न चलाई।। आई।। 9।।
चेत मास मोहन नहीं पास। निशदिन आली रहूं मैं हिरास।।
नयन नीर जारी लगी आस हिय। देखूं दृगन भर के कब पिय।।
न देत दिखाई।। आई।। 10।।
लाग्यो मास सुभग बैसाख। न्हावैं सबै सरिता दोउ पाख।।
सो पूजे गवर जा मिलन फलचार। हम तो दई सब आस बिसार।।
अति में बुराई।। आई।। 11।।
जेठ मास लागो सखि आय। फरकत बाग नयन दरसाय।।
पिया घर आवत कह्यौ काहू आन। दौर के द्वार लख्यो पति प्रान।।
भई चितचाई।। आई।। 12।।
लौंद पुनीत पड़ो सुन बैन। करती है दान रहे चित चैन।
रैण दिण पिय संग कर अनुराग। गौरीशंकर कथ कहै प्राग।।
है लल्लून गाई।। आई।। 13।।

बारहमासा के बाद चौमासा काव्य बहुसंख्या लिये मिलते हैं। चौमासा अर्थात् चार माह का काल। इसमें वर्षाजनित आसाढ़, सावण, भादवा तथा आसोज माह सम्मिलित हैं। इन महीनों में धरती का कण-कण अंकुरित हुआ मिलता है। चारों ओर हरियाली और पानी की बहुलता से आवागमन भी बाधित रहता है। बीकानेर की ओर प्रचलित रमत ख्याल शैली में चौमासा ख्याल भी मिलते हैं।


पणिहारी की सास की भूमिका में दयाराम

बारामासिया के अलावा दसमासिया पर लिखा साहित्य भी मिलता है। दसमासियों में गर्भावस्था में गर्भस्थ शिशु और उस दौर का बड़ा ही सुन्दर वर्णन है। इस सम्बन्धी साहित्य भी उपलब्ध रहा है। मेरे संग्रह में एक पुरानी बारामासिया लावणी नामक पोथी में दसमासिया दिया हुआ है। कुल दस छन्दों में निबद्ध इस काव्य रूप के प्रारंभ के पांच उद्धरण यहां द्रष्टव्य हैं-

।। टेर।। जिवड़ो घबरावै बालम तोय मालम ना पर पीड की।।
।। दोहा।। पहलो म्हैनू लागियो सजी इब धण रै गई न्हाई।
मैं बालक समझी नहीं तो मेरी चिरचा करै लुगाई।।
नणद कहै कितना दिन बीत्या साच कहो भोजाई।
साथण और सहेलियां बकबक हसती मोय।।
दोराणी मसलो कियो तो तू इब क्यों जीवल्ह कोय
चाव से बांट बधाई।। बालम....
दूजो म्हैनू लागियो सजी कुसकै पेट हमारो।
सोऊं जद निद्रा नहिं आवै अन जल लगै खारो।।
आठ पहर चोसट घड़ी स मेरो जीव रहै अनसारो।
अनसारे काया भई इब के करूं उपाय।
पूंच्यो अंश पेट के मांई लियो कलेजो छाय।।
खा गई कच्चो पारो। बालम....
तीजो म्हैनूं लागियो तो जी कछुयेक ऊंचो आयो ।
हुयो नूर बेनूर परी को छिपतो नहीं छिपायो।।
अरज करूं करतार पिंड कै यो के पाप लगायो।।
कूण सुणै किसकूं कहूं भाल उठै भरपूर।
बालम टोपा झैर को स यो हुयो गेर कर दूर।।
मेरी सासू को जायो।। बालम....
चौथे मास सांस के सागै चालै हूक घणेरी।
भाच्यो हो गयो पेट विधाता या के आफत गेरी।।
आठ पहर चोसट घड़ी स मेरे मुसकल सांस सवेरी।
कदेक जागूं पड़ रहूं पलक लगै नहीं नैन।।
किसकूं कहूं दरद की बतियां नहीं बदन में चैन।।
सुणो सब सखियां मेरी।। बालम....
पांचउं म्हैनू लागियो स पेडु मैं चटको चालै।
बादाम पिस्ता दाख छवारी मेवा पर चित चालै।।
साथण करै खराब बालमो सेजां में दिन घालै।
हाय दई कैसी भई बिना सरम की बात।
नेड़ा घालै बालमो स मेरो थरहर कंपै गात।।
रही ना सोवण हाली।। बालम....

इस पुस्तक में बारह मासिया के अलावा अठारा मासिया, दस मासिया तथा विधवा का बारह मासिया भी दिया हुआ है।

आधुनिक काव्यधारा ने भी इस धारा को बड़ी सशक्त सच्चाई से पकड़े रखा। राजस्थान में ठावे कवि गजानन वर्मा ने बारहमासा की रचनाकर कई जगह श्रेष्ठ नृत्यनाटिका की बंदिश दिये प्रदर्शन किये जो बहु प्रशंसित हुए।

**प्रसिद्ध लोककला प्रचेता देवीलाल सामर ने अपने भारतीय लोककला मण्डल के माध्यम से पणिहारी नृत्य के आधार पर बड़ी ही लोकप्रिय नृत्यनाटिका तैयार कर देश के विभिन्न भागों में सैकड़ों प्रदर्शन दिये। इसमें सामरजी स्वयं पणिहारी का मांणीगर, शकुन्तला पंवार पणिहारी तथा दयाराम पणिहारी की सास की भूमिका में सर्वत्र सराहे गए।**

**इस लोकव्यापी वाणी-विरासत को देख-पढ़ यह कल्पना, चाहे चुटकी भर ही सही, कौंधने लगती है कि बारहमासा विषयक सारी रचनाएं विरहिणी जनित ही क्यों हैं? क्या किसी विरही-पुरुष ने भी अपनी धण को याद किया? यदि नहीं तो इसका क्या कारण रहा? क्या विरह घूंघटधारिणी के घट-घट में ही व्याप्त होता है? पुरुष-घट को इसका अहसास ही नहीं होता या उसके लिए कोई बंधन बंधान नहीं रहा?**

# लोकचेत्ता हकीम खां सूर

**-डॉ. तुक्तक भानावत-**

मेवाड़ की माटी अपने शौर्य, स्वातंत्र्य, त्याग, बलिदान, देशप्रेम और लोकचेतना की बेजोड़ मिशाल रही है। इस माटी में

न जाने कितने शूरवीरों-वीरांगनाओं का रक्त रंगा हुआ है। इसका परस करते ही इतिहास आंखों पर चढ़ आता है। बाप्पा रावल, रावल रत्नसिंह, महाराणा हमीर, लाखा, राणा कुम्भा, राणा सांगा, महाराणा प्रताप, राजसिंह, भामाशाह, जयमल, पत्ता, गोरा, बादल, चूण्डा, पन्नाधाय, हाड़ीरानी, कृष्णाकुमारी, झालामान, राणा पूंजा, भीलू राणा, मीरां तथा चेतक; ऐसे कितने ही नाम गिनाये जा सकते हैं जिनकी कथा-गाथाओं से यहां का कण-कण गाता-बजाता हुआ इतिहास की अमर थाती बना हुआ है।

वीरवर हकीम खां सूर भी यहां का एक अमर पन्ना है जो हल्दीघाटी के स्वातंत्र्य संग्राम में महाराणा प्रताप की ओर से हरावल में रहकर मुगल सेना से जूझता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। एक उद्भट योद्धा के रूप में हकीम खां ने अपने मजहब की मर्यादा और नेम नियम का पूर्णत: पालन कर अपने कर्त्तव्य-धर्म को कभी नहीं छोड़ा।

इस पठान मुसलमान ने कभी हिन्दू धर्म स्वीकार नहीं किया। प्रताप की तरह कभी एकलिंगजी की जय-जयकार नहीं की। कभी केशरिया साफा धारण नहीं किया। मन्दिर नहीं गया। मस्जिद और कुरान की शान रखी। अपना परम्परागत हरा साफा पहना परन्तु स्वतंत्रता और स्वाधीनता के लिए अपने हक की असली लड़ाई लड़ने वाले प्रताप का साथ दिया और मुगलों को खदेड़ा। हिन्दू की सेना में रहकर उसने हिन्दू को नहीं छोड़ा और मुसलमान होकर उसने मुसलमान को भी क्षमा नहीं किया अपितु दुश्मन की सेना में क्या हिन्दू और क्या मुसलमान जो भी सामने आया उसे तलवार से मौत के घाट उतारा।

डिंगल के प्रसिद्ध कवि देवकर्णसिंह ने इस वीर की स्मृति में एक सौ ग्यारह दोहों का शतक लिखकर जहां अपनी प्रखर काव्य-शक्ति का परिचय दिया है वहां हल्दीघाटी के इस जुझारू को उचित गौरव और लोक सम्मानपूर्ण श्रृद्धांजलि अर्पित कर उसे यश मंडित किया है। जाति, मजहब, धर्म, समाज और सम्प्रदाय सब महत्त्वपूर्ण हैं मगर इन सबसे ऊपर कोई सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण चीज है तो वह है देश-राष्ट्र की स्वाधीनता, उसकी लोकचेतना, मुक्ति संग्राम और उसके प्रति मर मिटने की ललक। हकीम खां सूर का जीवन इस बात का जीता जागता उदाहरण है।

देवकर्णसिंह द्वारा रचित इन्हीं भावनाओं को संजोये हुए कुछ दोहे यहां दृष्टव्य है। इस काव्य का एक दोहा इतना रक्तशाली और अनूठा है कि कुछ कहते नहीं बनता। इन दोहों में हकीम खां सूर जैसे हमारे सामने सरजीवित हो रण भारत में शौर्य, शक्ति और देशभक्ति का सूरज बन तेजोमय हो उठा है।

हलदघाट कागद बणा, कमल बणा खांडोह।
मुगल रगत स्याही बणा, मजब फरज माड्योह।

अर्थात् हल्दीघाटी को कागज बनाया, तलवार को कलम बनाया। मुगल रक्त को स्याही बना, जिसने अपने मजहब के कर्त्तव्य को अंकित किया।

धिक-धिक रे अकबर थने,
(थारी) व्ही बुद्धि आंधीह।
(जठे) बाप हाथ राखी बंधी,
(उठे थूं) रण कमर बांधीह।

अर्थात् अकबर तुझे धिक्कार है। तुम्हारी बुद्धि अंधी हो गई। जिस मेवाड़ में तुम्हारे पिता हुमायू ने करूणावती के राखी बांधी वहां तुमने युद्ध करने को कमर कसी।

अजा सुणी मसजित गया,
झालर सुण मंदराह।
रण भेरी सुण राण री,
साथ गिया समराह।

अर्थात् मुसलमान अजान सुन मस्जिद गये और हिन्दू झालर सुन मन्दिर परन्तु राणा प्रताप की रणभेरी सुन युद्ध के लिए उनके साथ हो लिये।

मेदपाट अनजक भले
लियो न कहे पठान।
(जठै) मूंधी मुगती सांसली
(उठै) अरपण मूंधी जान।। 4।।

पठान कहता है कि मैंने भले ही मेवाड़ का अन्न-जल ग्रहण नहीं किया परन्तु जहां आजादी की स्वांसें सबसे महंगी हैं वहां महंगी जान भी अर्पित कर सकता हूं।

यो बन्दो इस्लाम रो,
तजे न नियम कुराण।
पढ़ण नमाज सलीम संग,
खग बाहण सथ राण।। 5।।

यह बन्दा (हकीम खां) इस्लाम का वफादार है जो कुरान के नियमों को कभी नहीं छोड़ता है। नमाज पढ़ते वक्त सलीम के साथ रहता है पर तलवार चलाते समय राणा का साथ देता है।

सिर साफो हरियो बंध्यो,
खां कटवा लीधोह।
(पण) धज रातो महाराण रो
नंह झुकवा दीधोह।। 6।।

पठान हकीम खां सूर ने अपने मजहब के अनुरूप सिर पर हरा साफा बांधा। उसने अपना मस्तक कटवा लिया पर महाराणा प्रताप का लाल ध्वज नहीं झुकने दिया।

रीत भांत दहु मजब री,
खूब निभावै खान।
खुद मूंछ्या नीची रखे,
(पण) मूंछ ऊंच महाराण।। 7।।

खान पठान अपने मजहब के तौरतरीके भली प्रकार निभाता है। स्वयं अपनी मूंछें नीची रखता है (जैसा कि इनका नियम है) पर महाराणा प्रताप की मूंछ ऊंची रखता है।

नंह धोके इकलिंग मैं,
न कड़ देव प्रणाम।
देव रहे देवक रहै,
(सूरि) शतसर करै सलाम।। 8।।

सूर न एकलिंगजी को नमन करता है, न किसी देव को प्रणाम करता है। देव और देवता दोनों को छोड़कर तलवार को सलाम करता है।

नंह बांधी सूरी ममर, मेवाड़ी पगड़ीह।
पण पातळ जिम खान,
तू कर दहु खग पकड़ीह।। 9।।

सूर ने युद्ध में कभी मेवाड़ी पगड़ी नहीं बांधी परन्तु युद्धभूमि में प्रताप की भांति अपने दोनों हाथों में दो तलवारें अवश्य रखीं।

हळदघाट हिन्दु पठान
(मिष्ठ) धर्म ऊंची कीधोह।
भुगति रखण रण साथ कर
रगुत मिला दीधोह।। 10।।

हल्दीघाटी के युद्ध में हिन्दू और मुसलमान दोनों ने मिल धर्म को ऊंचा किया। स्वाधीनता की रक्षा के लिए दोनों एक साथ कटे और दोनों का रक्त एकमेक हो गया।

वे सोहे अब खास आम,
सूर समर सिर मोड।
अकबर नव रतना बिचे,
राण रतन बेजोड़।। 11।।

अकबर के नवरत्न तो उसके आमखास में ही शोभित होते रहे पर राणा का यह बेजोड़ रत्न सूर युद्ध भूमि में सिरमौर बना शोभित हो रहा है।

को कहा बात हकीम री,
बढ़ग्यो पातल राण।
जीभ चढ़ूया पातळ रहे,
राज है सीस पठान।। 12।।

हकीम खां की क्या बात करें, यह तो राणा प्रताप से भी बढ़ गया है। प्रताप तो लोगों की जिव्हा पर रह गया है पर इस पठान की रज तो शीश पर चढ़ाई है-

हकीम खां सूर वस्तुत: एक ऐसा स्वाधीनचेता योद्धा था जो स्वाधीनता के खातिर कुर्बान होने को इन्सानियत की सबसे बड़ी साख समझता था। मेवाड़ की माटी से जिसका लेश मात्र भी लगाव नहीं रहा। मुसलमान होकर भी जिसने हिन्दुवां सूर्य प्रताप की ओर से मुगलों से लोहा लिया और अपने शहीदपन से इस माटी को रक्त, वीरत्व और गौरव दिया, वह वीर निश्चय ही प्रताप का यश, प्रताप और इस माटी की अमर महक है। श्री सूर जैसे वीरों ने स्वतंत्रता के इतिहास को उजला पन्ना दिया है। दूधिया अध्याय दिया है। हल्दीघाटी को हलदाया है और मेदपाट हित मरण को वरण कर स्वनाम धन्य किया है।

# गीतकार किशन दाधीच की बेटी धीप्रदा का मंगल परिणयोत्सव

उदयपुर के जानेमाने गीतकार किशन दाधीच-प्रभावती की होनहार सुपुत्री धीप्रदा का मंगल परिणय हैदराबाद निवासी बद्रीविशाल-रेखा तिवारी के सुपुत्र अंकित के साथ 07 जुलाई 2019 को सम्पन्न हुआ।

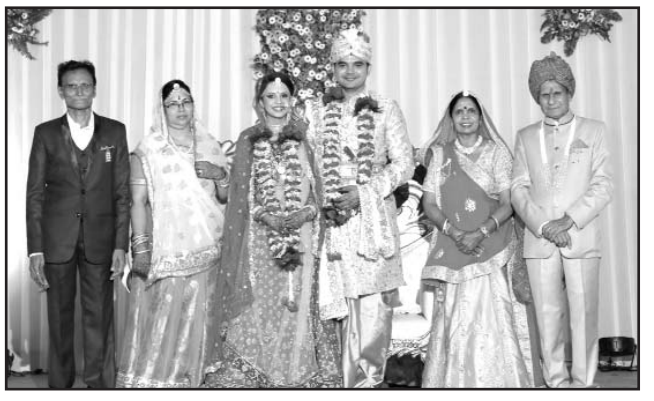

श्री दाधीच की छोटी बिटिया अक्षरा ने बताया कि सौभाग्य से दीदी-जीजाजी दोनों ही सीए हैं। जीजाजी सउदी अरब में एडवाइजर फाइनेंस हैं। विवाहोत्सव में बड़े आनन्द एवं उल्लास के साथ पारम्परिक एवं आधुनिक सभी नेगचारों का विधिपूर्वक निर्वाह किया गया।

ओरबिट रिसोर्ट में सम्पन्न हुए इस विवाहोत्सव में अनेक साहित्यसेवियों, शिक्षाविदों, राजनेताओं एवं कला-संस्कृतिकर्मियों ने अपनी गरिमापूर्ण उपस्थिति दी। इनमें प्रमुख हैं- जोधपुर से मीठेश निर्मोही, आईदानसिंह भाटी, सत्यदेव सवितेंद्र, दीपा परिहार, छगन राव तथा नगर के शैल चोयल, डॉ. भगवतीलाल व्यास, डॉ. महेन्द्र भानावत, संगम मिश्रा, डॉ. देव कोठारी, डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ, डॉ. ज्योतिपुंज, डॉ. मधुसूदन शर्मा, डॉ. माधव हाड़ा, डॉ. ए. एल. दमामी, त्रिलोक पूर्बिया, डॉ. राजशेखर व्यास, डॉ. सुधा आचार्य, डॉ. हेमेन्द्र चंडालिया, डॉ. प्रमिला चंडालिया, डॉ. एल. एल. शर्मा, विलास जानवे, आदिब अदीब, डॉ. लईक हुसैन, डॉ. मंजु चतुर्वेदी, विष्णु शर्मा 'हितैषी', डॉ. तुक्तक भानावत, डॉ. अरूण चतुर्वेदी, चेतन औदिच्य एवं रंजना भानावत। शब्द रंजन की हार्दिक बधाई।

# आरक्षितों !

अरे आरक्षितों!
जो मिला है उसे खाते रहो!
देश के सामने
अनपचे दस्त की तरह बाहर मत आओ !
विरोध, प्रजातंत्र,आरक्षण हाथ में लेकर
देश को नहीं जलाने देंगे ,
देश बड़ा है तुम बड़े नहीं हो।
तुम्हारे विध्वंसकारी भेष
देश देखता है!
उसकी आंखों में रोष है
इस रोष का अर्थ समझ लो!
फिर मत कहना
हमें सोचने का आरक्षण नहीं दिया!
यह हितकर है
खाली आरक्षण अहितकर ।
कार तोड़ी तो पकड़ लेंगे
नाक पकड़
देश के सामने झुका देंगे।

**-बीएल माली अशांत**

स्मृतियों के शिखर (80) : डॉ. महेन्द्र भानावत

# कामड़ संतों के अध्येता डॉ. चम्पादास कामड़

**हिंदी साहित्य के इतिहास के विद्वानों ने लोक में जो सामग्री अलिखित, कंठासीन तथा श्रुत बनी हुई थी, उस ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। असल में किसी भी साहित्य का मूल उठाव उसकी लोकधर्मिता की आधार पीठिका से हुआ है जिसे हमने कभी महत्वपूर्ण ही नहीं माना। डॉ. चंपादास ने कामड़ समुदाय के लोकसाहित्यिक, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक अध्ययन को विषय बनाकर पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। उनके इस कार्य में भी मैं आदि-अंत तक साथ रहा। ऐसा अक्सर होता है जब हम अपनी विलुप्त होती धरोहर पर अफसोस ही अधिक करते रह जाते हैं किंतु उसे बचाये रखने का कोई सार्थक प्रयत्न नहीं कर पाते हैं। संरक्षण के ऐसे कार्य समाज-संगत से भी अधिक किसी व्यक्ति की निष्ठा-संगत से फलदायी होते हैं। डॉ. चंपादास ने जो कार्य किया उसका लेखाजोखा आनेवाला समय करेगा। अपने वर्तमान में कोई बड़ा महत्वपूर्ण कार्य भी कर रहा होता है तब भी हमारा मन उसे उतना महत्वपूर्ण मानना स्वीकार नहीं करता। किसी भी मूल्यवान कार्य को मोल देने के लिए समय की प्रतीक्षा भी जरूरी लगती है।**

डॉ. चंपादास कामड़ से मेरा परिचय तब हुआ जब वे हिंदी में एम. ए. की परीक्षा पूर्ण कर आगे शोधकार्य करने का मन बनाये हुए थे। वे शोध के कई विषय लेकर आये थे पर मुझे लगा कि वे जिस समुदाय से सम्बद्ध हैं वह समाज भी अपनेआप में बड़ा समृद्ध और विराट विरासत का धनी है। एक पूरा का पूरा सांगोपांग पंथ याकि घराना ही है जो धर्म, अध्यात्म और भक्ति के विहंगम शक्ति-वैभव से परिपूर्ण है।

इस घराने में देवी हिंगलाज की आराधना-उपासना जनित अलख जागरण की लंबी परिपाटी से जुड़ी अनेक अमूल्य वाणियों, हेलों, भजनों, हरजसों, हेलियों, स्तुतियों, ब्यावलों, लीलाओं, सुमिरणियों, बुझोवलों, उलटबांसियों, आरतियों, प्रभातियों जैसी विविध गायकियों के कंठासीन दस्तावेज हैं। सामाजिक समरसता से जुड़े पाखंडों, अनैतिक कार्यों, दुराचारों पर जहां करारी चोट हुई मिलती है वहां मनुष्य के श्रेष्ठत्व से जुड़े अनेक मनोरथों, उपदेशात्मक उद्धरणों, लीलापुरुषों के चमत्कारिक करतबों, मनुष्य रूप में देव स्वरूपों के भ्रमणों तथा पूर्वजन्म और पुनर्जन्म के भटकनों की समझाइश देते अवतरण सुखानंद का अवगाहन कराते हैं।

कामड़ों की सर्वाधिक प्रसिद्धि बाबा रामदेव के उपासक के रूप में हुई लेकिन यह बहुत बाद की बात है। मूल रूप में तो ये देवी हिंगलाज के ही आराधक हैं। इन्हीं कामड़ों का अध्ययन करने मैं पहलीबार सन् 1959 के भाद्र में लगनेवाले बाबा रामदेव के मेले में रूणीजा-रूणीचा-रामदेवरा गया। वहां से लौटकर मैंने धर्मयुग में एक आलेख लिखा।

रामदेवरा में लगनेवाले रामदेवजी के मेले में जगह-जगह कामड़ परिवार भजन गाता हुआ तथा तेराताली का प्रदर्शन करता हुआ मिल जायेगा। इस मेले में सारे के सारे कामड़ आकर एकत्र होते हैं। अपने मन में सोची बात-मनौती पूरी होने पर रामदेवजी के भक्त इन कामड़ों से पांच भजन सुनते हैं, जमा दिलवाते हैं और तेराताली का प्रदर्शन करवाते हैं। इस प्रदर्शन में अनाज कूटना, उसे साफ करना, चक्की में पीसना, आटा गूंदना, उस आटे से रोटले पोना, दही-बिलोना, मक्खन निकालना, चरखा चलाना, सूत लपेटना, सिर पर कलश रखना, खेत में खड़ी पकी फसल काटना, दही से घी तैयार करना जैसे तेरह प्रकार के हाव-भाव व्यक्त किये जाते हैं।

पांव में जो मजीरे बांधे जाते हैं वे 'तेराताली' कहलाते हैं। कोहनी के मजीरे 'तालें' कहलाते हैं और हाथ में रखे लंबी डोरवाले मजीरों को 'छूटे मजीरे' कहते हैं। कामड़ महिला मजीरे बंधे पांव को फैलाकर अपने सिर पर कांसे के थाल में चरवी-लोठा और उस पर जलता दीपक रख मुंह में नंगी तलवार लिए जमीन पर बैठी-बैठी प्रदर्शन प्रारंभ करती है और कभी

लेटी हुई तो कभी लेटी-घूमती हुई सारे हाव-भाव प्रदर्शित करती है। तेराताली समाप्त होने पर तलवार और हाथ की तालें नीचे रख कर दोनों हाथों में कांसी की थालियां लिए ऊंगलियों पर घुमाई जाती हैं। ये थालियां बड़ी तेजी से घूमती हैं।

डॉ. चंपादास ने अपने समुदाय में प्रचलित विविध मान्यताओं पर गहन खोजबीन की। उनके अनुसार सृष्टि के जलमग्न होने से पूर्व यह आकाशवाणी हुई थी कि हे मनु! पूरी पृथ्वी जलमग्न होने वाली है इसलिए तुम सप्त ऋषियों को तथा कुछ औषधियों के बीज लेकर, शतरूपा के साथ नौका में सवार हो जाना। मैं मत्स्य अवतार धारण कर नौका को डूबने से बचा लूंगा। तदनंतर वैसा ही हुआ और इस प्रलय के दृष्य के दृष्टा केवल 'कुमेर ऋषि' ही थे जो कि सुमेर पर्वत पर तपरत थे। कुमेर की गणना सप्त-ऋषियों में की जाती है। इनसे भी कामड़ों की उत्पत्ति मानी जाती है।

इसी तरह दूसरे जोगपट्ट में शिव-मार्ग का जिक्र है। उसके अनुसार शंकर देवी को ले पाताल गये। वहीं ज्योति-कलश का ध्यान, माहात्म्य समझाया। इसमें यह भी जिक्र है कि ऋषि-परंपरा में जिनको सिद्ध स्वीकार किया गया और जिनके लिए बिछात कर बैठने का सम्मान देते हुए, बैलगेड़िया (कामड़ी) देने का प्रवचन किया, वे छड़ीधारक सिद्ध कामड़ कहलाये। अन्य ऋषि केवल भगवां अंगोछा कंधे पर धारण करने के अधिकारी हैं।

इस जोगपट्ट में यह भी उल्लेख है कि आद पुरुष ने ब्रह्माजी को बुलाकर हरे वृक्ष को कटवाया। इसके नौ पाटिये (बैठकें) गड़वाकर नौ नाथों को दिये। दस कामड़ी (लकड़ियां) गुसाइयों को दी तथा चौरासी बैलगेड़िये (कामड़ी-छड़ी) कामड़ों को दिये। तीनों को भगवां प्रदान कर धर्म प्रचारक बनाया साथ ही हिंगलाज-उपासना तथा शिवपंथ चलाया।

इस प्रकार कामड़ अपने प्रारंभिक काल से ही शिव-शक्ति के आराधक, उपासक व प्रचारक रहे। आज भी ये आदधर्मी नाम से स्वीकार्य हैं। इनके मत के मूल में यह धारणा देखी जा सकती है।

डॉ. चंपादास को संत-संस्कृति के संस्कार अपने परिवार से बचपन के दौरान ही विरासत में मिले। अध्ययनकाल में तीसरी कक्षा से ही पिताश्री किशनदासजी ने उन्हें अपनी परंपरा में शिक्षित करना प्रारंभ कर दिया। प्रारंभ में मजीरा फिर तन्दूरा और फिर हारमोनियम पर हाथ आजमाने के साथ भजन और वाणी गायन के प्रति अभिरुचि पैदा कर दी। जहां-जहां भी वे जाते, चंपादास भी उनका अनुसरण करते। धीरे-धीरे वे बजाने-गाने के साथ-साथ अन्य क्रियाओं में भी दक्ष हो गये। य ह सब करते हुए भी चंपादास ने अपने अध्ययन का मार्ग नहीं छोड़ा और उसे प्रशस्त बनाते हुए एम. ए. तक की शिक्षा ग्रहण की। हिंदी के साथ-साथ राजस्थानी में भी एम. ए. किया।

उनकी इस पारिवारिक पीठिका का परिचय पाकर मैंने उन्हें सुझाव दिया कि वे कामड़ समुदाय में प्रचलित प्रमुख क्रियाकांडों और अनुष्ठानों से संबंधित जो श्रुत अथवा मौखिक कंठासीन साहित्य है उसी पर शोध करने का मन पक्का करें। इससे वे सर्वथा एक अनजान और नये विषय का प्रतिपादन करते हुए विद्वानों का ध्यान इस ओर आकृष्ट करेंगे। यह कार्य उनके लिए दुष्कर नहीं होगा।

डॉ. चंपादास ने कामड़ समुदाय के लोकसाहित्यिक, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक अध्ययन को विषय बनाकर 2001 में सुखाड़िया विश्वविद्यालय से पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। उनके इस कार्य में भी मैं आदि-अंत तक साथ रहा।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि हिंदी साहित्य के इतिहास के विद्वानों ने लोक में जो सामग्री अलिखित, कंठासीन तथा श्रुत बनी हुई थी, उस ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। असल में किसी भी साहित्य का मूल उठाव उसकी लोकधर्मिता की आधार पीठिका से हुआ है जिसे हमने कभी महत्वपूर्ण ही नहीं माना।

जम्मा एवं शंखोद्धार की क्रियाओं में हरजी भाटी, तुलसीदास, जालम दर्जी, राणी रूपांदे, लिखमा माली, धेनदास, विनोजी, हीरानंद माली, बुधरजी, बगसा खाती, हरजी भाटी, कनीराम, माना, राजू तेली, दलजी ओस्तवाल, अणदा सोनी, रामोजी राव के अलावा कामड़ संतों में उल्लेखनीय गोकुलदास, ब्रह्मप्रकाश, बंशीदास, नवलदास, किशनदास, प्यारचंद, दयारामदास, तोलूदास, चेतनदास, धेनदास, गणेशदास, प्रतापदास, चंपादास जैसे संतों ने नानाविध भजनों, वाणियों एवं साखियों से मानव जीवन को आत्मशुद्धि की ओर प्रेरित कर सुकृत्य करने का संदेश दिया।

एक भजन में मीरां अपने सांवरिया को संबोधित कर कहती है - 'आप कहें तो मैं मोर मुकुट बन जाऊं। आप धारण करें तो मैं आपके मस्तक पर रमण करने लगूं। आप कहें तो काजल बन आपके नयनों की शोभा बढ़ाऊं। आप कहें तो मैं हिये का हार बन आपके हिरदै में रमण करूं। आप कहें तो मैं जमुनाजी का जल बन आपके अंग-प्रत्यंग में समाजाऊं। आप कहें तो मैं बांसुरी बन आपके होठों का स्पर्श करूं। आप कहें तो मैं पायल बन आपके चरणन की दासी बन जाऊं।'

एक अन्य भजन में मीरां कृष्ण से मिलने को बेताब है किंतु उसको अपने घरवालों से ही छुटकारा नहीं मिल पाता है। ऐसी स्थिति में मीरां को मिलने का कोई बहाना नहीं सूझ रहा है। घर में वृद्ध सास का बार-बार हुकम उठाना पड़ता है। नहाने जाती ननद को पानी पहुंचाना पड़ता है। श्वसुर क्रोधी स्वभाव के होने से उनकी जोर-शोर की आवाज ही उसे कंपकंपी दे जाती है। नखराले देवर के हर समय नखरे उठाने पड़ते हैं। पतिदेव को भोजन की थाल परोसनी पड़ती है। हर समय बच्चों की धमचक मची रहती है। वह चूल्हे चौकी से बड़ी मुश्किल से निवृत्त हो पाती है कि घट्टी फेरने बैठ जाना पड़ता है। कृष्ण से भेंट की कोई विधि हाथ नहीं लगने पर मीरां अगले जन्म में भी मीरां के रूप में ही जन्म लेने का आग्रह करती है।

बदलते, परिवर्तित होते समय में भारतीय जीवनधर्मिता की पारंपरिक श्रेष्ठता और शालीनता के निर्वाह को बड़ा धक्का लगा है। अब वे आस्थावान संस्कारजनित सरोकार नहीं रहे तथा न वैसी विश्वसनीय भाव भूमिका ही देखने को बची है।

ऐसी विकट परिस्थिति में डॉ. चंपादास ने कामड़ों में सुरक्षित एवं संरक्षित जो धर्मनिष्ठ लोकाचार भक्तिरंग के संगी बने हुए थे, उनका संग्रह कर उन्हें धूमिल अथवा तिरोहित होने से बचा लिया है। ऐसा अक्सर होता है जब हम अपनी विलुप्त होती धरोहर पर अफसोस ही अधिक करते रह जाते हैं किंतु उसे बचाये रखने का कोई सार्थक प्रयत्न नहीं कर पाते हैं। संरक्षण के ऐसे कार्य समाज-संगत से भी अधिक किसी व्यक्ति की निष्ठा-संगत से फलदायी होते हैं।

डॉ. चंपादास ने जो कार्य किया उसका लेखाजोखा आनेवाला समय करेगा। अपने वर्तमान में कोई बड़ा महत्वपूर्ण कार्य भी कर रहा होता है तब भी हमारा मन उसे उतना महत्वपूर्ण मानना स्वीकार नहीं करता। किसी भी मूल्यवान कार्य को मोल देने के लिए समय की प्रतीक्षा भी जरूरी लगती है।

शब्द रंजन
उदयपुर, सोमवार 15 जुलाई 2019

## सम्पादकीय

# मरणोपरान्त की मान्यताएं

यों तो जन्म और मृत्यु दोनों ही रहस्यमय हैं किन्तु मृत्यु के बाद जो मान्यताएं मिलती हैं वे कई दृष्टियों से अति रहस्यमय हैं। आत्मा की अमरता के सम्बन्ध में भी बहुत सारी गुत्थियां अनसुलझी हैं। मरने के बाद भी कुछ व्यक्ति पुन: जीवित होकर सबको चकित किये रहते हैं। मृतक पूर्वज की आत्मिक शान्ति आवश्यक मानी गई है। इसके लिए विविध मान्यताएं और अनुष्ठानपरक क्रियाएं करनी पड़ती हैं।

इनके अभाव में मृतक अपने परिजनों को शान्ति से जीवन बसर करने नहीं देता। कई प्रकार के दु:खों से परिवार वाले परेशान होते रहते हैं। ऐसा भी होता है जब व्यक्ति की मृत्यु का कुछ अता-पता नहीं रहता तब उसकी आत्मा भटकती रहती है।

युद्ध के दौरान जो सैनिक मृत्यु को प्राप्त होते हैं, उनकी न कोई पहचान रहती है और न यह ही पता लग पाता है कि कब कहां कैसे उसकी मृत्यु हुई ऐसी स्थिति में पुराने किलों, खण्डहरों में उसकी आत्मा अशान्त भटकती रहती है। यही कारण है कि वे खण्डहर सबके लिए डरावने बने रहते हैं। वहां रात्रि को तो कोई जाने की हिम्मत नहीं दिखाता लेकिन दिन को भी उसकी जान को खतरा बना रहता है।

अस्पतालों में जिस वार्ड-खाट पर रोगी की मृत्यु हुई होती है वहां दस-बीस-तीस वर्ष बाद भी रोगी के परिजन गाजे-बाजे के साथ विशिष्ट अनुष्ठान के साथ पहुंचते हैं और पूरी पारम्परिक विधि से आत्मा को ले जाते हैं और घर या फिर खेत पर प्रतिष्ठापित करते हैं।

ऐसे पूर्वज की विशिष्ट अवसरों पर मनौती स्वरूप रातिजगा अर्थात् रात्रि जागरण का आयोजन करते हैं तब पूर्वज किसी गृह-पुरुष की काया में प्रविष्ट होकर सबके समक्ष अपनी उपस्थिति देकर घर-परिवार की सुख, शान्ति तथा समृद्धि के लिए आशिष देता है।

# स्वामी सत्यमित्रानंदजी गिरि

**-डॉ. पूरन सहगल**

भारत की धार्मिक परम्परा के अनुसार महान विभूतियाँ पुन:-पुन: अवतार लेकर धर्म रक्षा में अपना जीवन समर्पित करती हैं।

उसी परम्परा में विवेकानंद के अवतार रूप में स्वामी सत्यमित्रानंदजी गिरि का 16 सितम्बर 1932 में आगरा में जन्म हुआ। जिन लोगों ने स्वामीजी को उनकी युवावस्था में देखा होगा वे विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि तब स्वामी सत्यमित्रानंदजी स्वामी विवेकानंद के भव्य स्वरूप जैसे ही दिखते थे।

कहा जाता है कि स्वामीजी के जन्म के समय उनकी माता त्रिवेणीदेवी एवं पिता शिवशंकरजी के घर की छोटी बगिया में स्वत: ही अचानक पुष्प प्रकट हो गए। शीतल मंद समीर बहने लगा। वर्षा की शीतलता सर्वत्र व्याप्त हो गई। जन्म के तत्काल बाद वहां एक दिव्य संत का पदार्पण हुआ।

उन्होंने बालक का मस्तक देखकर कहा- यह बालक त्रिलोक जयी होगा। वे बचपन से ही बड़े अध्ययनशील चिन्तक तथा निस्पृह व्यक्तित्व के धनी थे। सेवा भावना के वशीभूत वे मानव सेवा को सबसे बड़ी सेवा मानते थे।

मात्र 13 वर्ष की आयु में ही वे गुरु की तलाश में निकल पड़े। नेमीशारण्य में उन्हें वेद व्यासानंद का सान्निध्य प्राप्त हुआ जो उनके प्रथम गुरू कहे जा सकते हैं। उन्होंने उन्हें ऋषिकेश जाने का आदेश दिया।

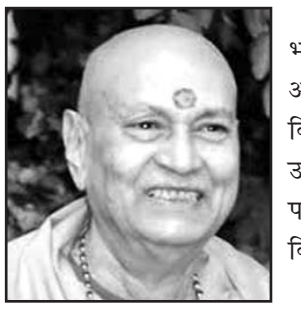

वहां वे स्वामी शिवानंदजी के श्रीचरणों में रहकर संपूर्ण वेदों वेदागों के ज्ञाता बने और जब भानपुरा के अवांतर शंकराचार्य शक्तिपीठ के शंकराचार्य सदानंदजी गिरि का निधन हो गया तब भानपुरा का प्रतिनिधि मंडल उज्जैन के विद्वान पं. सूर्यनारायणजी व्यास के पास पहुंचा। उन्होंने उन्हें अपना पत्र देकर करपात्रीजी के पास भेज दिया।

करपात्रीजी ने स्वामी शिवानंदजी के माध्यम से 09 अप्रेल 1960 को मात्र 25 वर्ष की उम्र में अपने सुयोग्य और पटुशिष्य ब्रह्मचर्य व्रतधारी शिष्य को भानपुरा पीठ पर शंकराचार्यजी गादी पर आसीन करा सत्यमित्रानंद गिरि नाम प्रदान किया। सन् 1960 से सन् 1969 तक वे यहां रहने वाले तीसरे पीठाधीश्वर थे। यह पद उन्होंने स्वत: ही त्याग दिया।

भानपुरा ही नहीं अपितु समूचा मालवांचल स्वामीजी की प्रभावी वाणी एवं वात्सल्यमय स्नेह से सिक्त हो गया। गंगा-जमुना-सरस्वती, चम्बल, शिवना, शिप्रा और नर्मदा की निर्मलता और सदानीरा सप्ततीर्थी प्रवाह स्वामीजी की वाणी में सदा-सर्वदा प्रवाहित होता रहा।

उन्होंने हरिद्वार में भारतमाता मंदिर का अनुष्ठानिक तीर्थ स्थापित किया। भारत सरकार ने उन्हें सन् 2015 में पद्मभूषण अलंकरण प्रदान किया।

हरिद्वार में 25 जून 2019 को वे अपने निवास राघव कुटीर में ब्रह्मलीन हुए। प्रधानमंत्री नरेन्द्रभाई मोदी ने उन्हें सच्चा पथ-प्रदर्शक, ज्ञान और अध्यात्म चेतना का प्रतीक बताया। उन्होंने निस्वार्थ भावना से देश और समाज सेवा की प्रेरणा दी।

स्वामीजी आदिवासी अंचलों में भी गए। उनमें घुल मिलकर सत्य मार्ग का बोध कराया और शिक्षा के प्रसार की व्यवस्थाएँ जुटाईं। गीता उनका आदर्श ग्रंथ रहा।

वे जहाँ भी गए गीता का उपदेश देना नहीं भूले। वे कहते रहे जब भी व्यक्ति अवसाद में हो वह गीता का अध्ययन एवं मनन करे। इससे उसका अवसाद तो मिटेगा ही, परमात्मा की ओर भी उसकी आस्था प्रबल होगी जिससे जीवन की सार्थकता का बोध होगा।

# सुकवि शीलव्रत शर्मा नहीं रहे

मूलत: कानोड़ निवासी पिछले छह-सात दशक से उदयपुर में रह रहे सुकवि शीलव्रत शर्मा (93) का गत दिनों आकस्मिक निधन हो गया। पुरानी काव्यधारा के विविध छन्दों में आशु रचना करने वाले शर्माजी का व्यक्तित्व अत्यन्त स्नेहशील, सहज, प्रभावी तथा प्रत्येक को अपना बना लेने का गुण लिये था। उन्होंने उदयपुर में बीजलीघर की नौकरी प्रारम्भ कर वहां काम करने वालों

को ही नहीं, बल्कि उच्चस्थ अधिकारियों तक को अपने कवि हृदय से प्रभावित किया और डोरे साहब के नाम से आयुर्वेद सेवाश्रम के पीछे की बस्ती में डोरे नगर की स्थापना करने में अग्रणी भूमिका निभाई। वे छोटी से छोटी समस्याओं, विवाह सम्बन्धी पत्रिकाओं तथा सभा-समारोहों में अपनी कवित्त्व शक्ति का प्रभाव दिये सबके चहेते बने रहे। अन्तिम समय तक भी वे काव्य-रचना के ही माहौल में गुनमुन रहे।

उल्लेखनीय पक्ष यह है कि श्री शर्माजी ने डॉ. महेन्द्र भानावत को चौथी कक्षा में ही अध्यापन के दौरान कविता करना सिखाया। इसका असर यह रहा कि अपने आठवीं तक के अध्ययन में भानावत पूरे जवाहर विद्यापीठ में बालकवि के रूप में चर्चित रहे। पिछले दिनों जब उन्होंने अपने काव्य गुरु शीलव्रतजी से उनके निवास पर भेंट की तो वे असहज ही लगे। उनकी श्रवण शक्ति फीकी हो गई थी और वे मौन ही अपनी कुर्सी पर बैठे टकटक उन्हें निहारते रहे।

उनके सेवाभावी सुपुत्र कैलाश शर्मा ने बताया कि उनकी कमजोर स्थिति को देखते हुए उन्हें हॉस्पिटल में दाखिल कराया जहां उन्हें ग्लुकोज चढ़ाया गया। वहीं उन्होंने कहा कि उन्हें शीघ्र ही यहां से घर ले जाया जाय यहां वे तनिक भी नहीं रहना चाहेंगे सो उन्हें घर ले जाया गया जहां परिजनों को लगा कि उन्हें अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो गया है और वे कुछ ही समय में सबके लिए मंगल कामना कर स्वर्ग सिधार गए।

## तुक्ता

अब रिश्तों में कहां प्यार के नाते-पोते।
नहीं दीखते जहां कहीं भी कपड़े धोते।।
भाग-भाग कर लगने के दिन नहीं रहे।
लगभग ही हो गए स्वयं हम किसे कहें।।
किस्से तो हैं कई कौन सुनने को राजी।
बीता वक्त हार ही देता जीती बाजी।।

# उदैपुर लंजो सहर

**डॉ. पुरूषोत्तम छंगाणी**

हरियल मगरां री गोद में बस्यो-थक्यो उदैपुर, कुदरत री हेक घणमोली देन है। इणरा फूठरा-फरा दरसाव हीवड़ै में मोद भरै। इणरो अतीत आज पण प्रतख है। कविसर इण नै विड़दावता नीं थक्या। कह्यो है- 'उदैयपुर लंजो सहर, मीठा बोलणियाह।' हेक कवि तो चावै के वो अगले जलम में महाराणा रो कबूतर हुवै अर-'' पीछोला पाणी पियां दाणा चुगां कोठार '' ।

पीछोला री घणी तारीफ करीजी। अेकर महाराणा रै सागै अेक खास चारण कवि पीछोला रै तट माथै घूमता हा। पीछोला रै टग्ग ( किनारो ) सूं लग्यो थको अेक मोटो भाटो ( पत्थर ) मेल्योड़ो है। पणिहारियां उठै पाणी भरती ही। उण टेम कविराज रै मन मांय इसो विचार आयो अर तुरन्त महाराणा ने सुणायो-

भाटा थूं सुभागियो, दिया पीछोला टग्ग।
गुलहंदा पाणी भरै, ऊपर दे-दे पग्ग।
पीछोला रो भाटो पण कवियां री निजर सूं नीं बच्चो।

उदैपुर जद सुन्दर है तो इणरी नारी भला सांतरी-फूठरी क्यूं नी हुवै ? हेक पदमण इज कोनी हुई, अठै तो घर-घर पदमणियां है। कवि कह्यो है-

उदियापुर री कामणी, गोखां काठै गात।
मन तो देवां रो डिगै, मिनखां कतरीक बात।

देवां रो मन डिगावण वालो फुठरापो है उदैपुर री नारी रो। पण, हेक बात विसेस। अठै री नारी घणी रूपाली, पण मारवाड़ री गैल भोली कोनी। घणी चतर है, गबरू मड़दां नै रूप-जाल में फासण वाली। जद ई तो मारवाड़ री अेक मरवण ( पत्नी ) आपरै धणी नै उदैपुर जावण सूं मना करती । लोकगीत में पण इण बांत रो उलेख है-

म्हैं थनै ढोला बरजियो हो
उदियापुर मत जाय,
उदियापुर री कामणी, थानै
राखैला बिलमाय।

उदैपुर लंजो सहर। इणरी जगचावी लूण्ठी झलक। उदैपुर रै उदय सूं हाल ताई बरकरार है इण रो मनोहारी रूप-रंग।

# शिक्षा में 10+2+3 का मॉडल डॉ. कोठारी की देन

**उदयपुर।** वर्तमान में विश्वविद्यालयों और स्कूलों में संचालित 10+2+3 शिक्षा व्यवस्था का मॉडल उदयपुर के डॉ. डीएस कोठारी की देन है।

इनका नाम उदयपुर की उन शख्सियतों में से है जिन्होंने देश और दुनिया में शिक्षा, विज्ञान और रक्षा विकास में खूब नाम कमाया। वर्ष 1964-66 में इनकी अध्यक्षता में कोठारी शिक्षा आयोग बनाया गया और इनकी सिफारिश के बाद ही केन्द्र सरकार ने 10+2+3 मॉडल को पूरे देश में लागू किया। इन्होंने स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में भी मातृभाषा में शिक्षा देने की सिफारिश की थी जिसे हाल ही नई शिक्षा नीति में भी शामिल किया गया है।

शांतिपीठ संस्थान के अनंत गणेश त्रिवेदी ने बताया कि भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की विज्ञान नीति में जो लोग शामिल थे उनमें डॉ. कोठारी भी थे। डॉ. कोठारी रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार रहे। भारतीय संविधान निर्माती सभा के सदस्य रहे मास्टर बलवंतसिंह मेहता बताते थे कि नेहरू ने एक बार अपने भाषण में डॉ. कोठारी का जिक्र करते कहा था कि वे भले ही खादी ना पहनते हैं पर सच्चे गांधीवादी हैं। कोठारी अंत समय तक गीता से प्रेरणा लेते रहे। वे बताते थे कि विज्ञान पढ़ने से ही गीता समझ में आएगी।

खोज-खबर

# कनक मधुकर का स्नेहिल सान्निध्य

उदयपुर से प्रकाशित साप्ताहिक पत्रों में कनक मधुकर द्वारा सम्पादित नवजीवन सर्वाधिक नियमित, सर्वाधिक पठनीय तथा सर्वाधिक प्रसार वाला सर्वाधिक पुराना पत्र था। इसमें अनेक साहित्यकार दूर-दूर तक के भी प्रकाशित होते थे। ग्रीष्मावकाश में बाहर पढ़ने वाले सभी मित्र अपने गांव कानोड़ में मिलते और विभिन्न साहित्यिक गतिविधियां शुरू कर देते। प्रताप जयंती पर नवजीवन का विशेषांक बड़ी साइज लिए सजधज के साथ प्रकाशित होता जिसमें मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत, विपिन जारोली और मेरी कविताएं भी छपतीं।

सन् 1958 में उदयपुर आकर कनकजी से परिचय हुआ तो ऐसा हुआ कि अन्त तक बड़ा स्नेहिल, आत्मीय बना रहा। वहां उनसे मिलने वालों में डॉ. प्रकाश आतुर, नंद चतुर्वेदी के साथ मैं होता। मधुकरजी बड़े यारबाज और खुली तबीयत के व्यक्ति थे।

नवजीवन के लिए सदैव समर्पित रहे और अखबार निकालना, उससे अपने सम्पर्क गाढ़े करना और पैसा कमाना कोई उनसे सीखे। वे अपने परिचितों की खबर कहीं से सुनकर या पढ़कर भी अपने ढंग से बनाकर नवजीवन में अवश्य छापते।

कोई खबर लेकर पहुंचता तो उससे कहते, खबर छपने पर चार प्रतियां खरीदकर ले जाना। प्रवासी उद्योगपतियों की जन्मतिथि या विशिष्ट अवसरों पर उनके फोटो सहित बधाई सन्देश, समाचार छापते और जब भी बाहर जाते, पूरी फाइल ले जाकर उनको भेंट करते और चन्दा लाते। सब खुश रहते।

एक बार नंद बाबू और मैं उनके कार्यालय पहुंचे। नंदजी ने कहा कि आपने प्रकाशजी को खद्दर का बना पाजामा, जब्बा और टोपी भेंट की थी।

हम दोनों को उससे वंचित क्यों रखा। कनकजी यह सुन मुस्कराये और बोले, आप लोगों के लिए भी यह व्यवस्था हो सकती है पर शर्त यह रहेगी कि आप निरन्तर खद्दर पहनेंगे। नंदजी तत्काल बाले, यह तो हमसे नहीं होगा। बात वहीं समाप्त हो गई।

कनकजी हम मित्रों की अच्छी खातिरदारी करते थे और हमारी बातचीत में हंसी-मजाकें चलती रहती थीं। वे कहते भी थे कि आप कभी-कभी आया करें तो खासा मन बहलाव होता रहे। नंदजी ने कहा, हमारे पास और है ही क्या, हम तो आपको बहलाते रहेंगे पर हमारी भी शर्त रहेगी कि जब भी हम आयें, चाय वाले को दो अंगुली का इशारा तो देंगे ही पर कभी-कभी तीन अंगुली बतानी पड़ेगी। आप चाहेंगे तो मन बहलाव भी बढ़ा देंगे।

इस पर कनकजी बड़ी देर तक मुस्कान बिखेरते रहे। मैंने पूछा, इनकी अंगुली का क्या राज है। नंदजी ने कहा कि जो भी आता है उसकी खातिरदारी करते हैं पर एक अंगुली बताने पर केवल चाय आती है। दो अंगुली पर चाय के साथ नमकीन और तीन अंगुली का इशारा देने पर एक गुलाब जामुन आता है।

मैंने कहा, यह तो ठीक है पर और कहां-कहां इनकी अंगुली का कमाल रहता है। कचौरी-समोसे के लिए भी कोई अंगुली बचाकर रखी है या नहीं।

समीक्षा

# अंध कुओं में आवाज लगाती कहानियां

'सांची कहें तोरे आवन से हमरे अंगना में आई बहार भउजी' के साथ आवाज उठाती लड़ियां ढोलक, झांझ, मंजीरे पर झूमने लगती हैं।

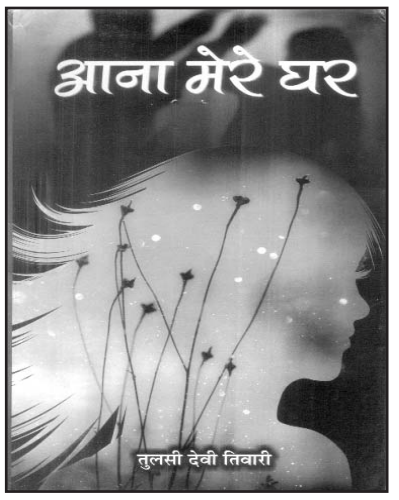


लोकरंग महक उठता है। सांस को आंच कहां पर आ टिकता है। इन कहानियों का लोक चरित्र-व्यवहार। उस पर क्यों मंडराने लगता है ताबड़तोड़ घन-घटाएं। इसकी पीड़ा कैसे सुनायें। यही है इन कहानियों के अस्तित्व की आतम गाथा।

इसी तरह का तुलसीदेवी तिवारी का 'आना मेरे घर' ऐसी कहानियों का ग्यारहवां संकलन है। इससे उनके कहानी प्रेम और उससे घुलमिल जाने का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। इनमें से एक कहानी संकलन 'केजा' छत्तीसगढ़ी भाषा में भी है।

छत्तीसगढ़ी भाषा का प्रभाव उनकी इन कहानियों में भी नजर आता है। इन कहानियों के समाज पर भी वह रंग-ढंग देखने को मिल जाता है। ये कहानियां उसी समाज की हैं जिसमें हम जी रहे हैं और जीतेजी छटपटा रहे हैं।

घर-गृहस्थी, बाजार, बस्ती, सुख-समृद्धि और भारतीय संस्कृति तथा विकास की दुहाई देने वाला अपना देश दलदल में खड़ा पुरजोर लगाने पर भी दिन पर दिन धंसता चला जा रहा है, इस ओर मानस मंथन कर द्वन्द्वित करती ये कहानियां अपने समय पर करारा व्यंग्य हैं।

'पुरोवाक्' तथा 'आत्म निवेदन' से जो शेष रहा है वह यही है कि तुलसी की बेचैनी अन्तर्द्वंद्व और समाधान के बन्द दरवाजों पर दस्तक देने के लिए कैसे गहरे अंध कुओं में आवाज लगाई है और उस मानसिकता को कैसे जी सकी हैं जो नरक से भी अधिक पीड़ादायक है। ये है इन कहानियों के होने का अर्थ। 'पर' के अन्धकार को जन्म देना और वह भी प्रतिकूल परिस्थितियों में कठिन प्रयास है। इसमें तुलसी पूरी तरह सफल रही है।

'आना मेरे घर', 'अकेला', 'चार रूपया बीस पैसे', 'चूहेदानी', 'माटी कहे कुम्हार से', 'पहला दिन' आदि कहानियां अपने पाठक-समाज को आईना दिखाती कहती हैं, 'आओ और देखो तुम कहां और कैसे होते गए हो?'

वाक्य छोटे-छोटे। उनकी मंशा निश्छल। उनमें यह छौंक भी ''जिहां जाही मोर बेटी, राज करही, देख के देखो, छोटा परवार, जिहां जियादा जुम्मेदारी झन रहै।'' कुल मिलाकर लोककथा को अपने में जीकर हिन्दी कहानी के लिए ये कहानियां एक नये रास्ते की खोज करती हुई प्रतीत होती हैं।

**- डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर**

# साकरियाजी द्वारा प्रणीत दो छिहत्तरी काव्य

साहित्य महामहोपाध्याय डॉ. भूपतिरामजी साकरिया से मिलना ठेठ राजस्थानी परम्परा के संस्कृति साहित्य एवं संस्कारशील महामनीषी हेतालू से मिलना है। वे मूलत: बालोतरा के हैं पर उनका कर्मक्षेत्र वल्लभ विद्यानगर बना हुआ है। यहीं पहली बार मैंने साकरियाजी के साथ आठवें दशक के उत्तरार्द्ध में उनके पिताश्री आचार्य बदरीप्रसादजी साकरिया के भी दर्शन किये।

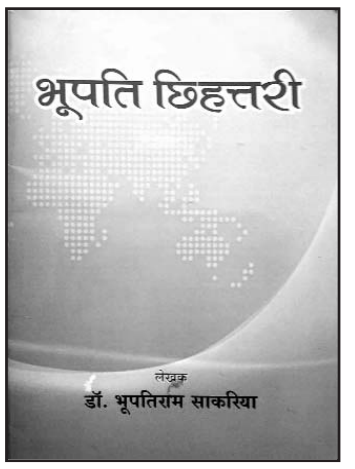


बदरीप्रसादजी का सर्वाधिक योगदान चारण भक्त कवि ईसरदान रचित हरिरस, मुहता नैणसी री ख्याल के भाग-4 और राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश भाग-3 का सम्पादन है। ऐसा ही योगदान भूपतिरामजी का महाकवि पृथ्वीराज राठौड़, अचलदास खीची री वचनिका, दूरसा आढ़ा तथा राजस्थानी साहित्यिक व सांस्कृतिक कोश के सम्पादन का है।

वल्लभ विद्यानगर के सरदार पटेल विश्वविद्यालय में मेरा दो-तीन बार जाना हुआ। वहीं डॉ. ओमानन्द सारस्वत सरस्वती तथा प्रो. सनतकुमार से जो आत्मीयता बनी वह अन्त तक बनी रही। अब तो दोनों ही स्मृति शेष हैं।

उल्लेखनीय पक्ष यह है कि डॉ. भूपतिरामजी साकरिया (93) वर्ष की उम्र में भी साहित्य सृजन में पगे हुए हैं। जब-जब भी उनकी कोई नवीन पोथी छपती है, वे मुझे भेजते रहते हैं।

प्रस्तुत भूपति छिहत्तरी में दो छिहत्तरी काव्य हैं। पहला राम के भाई भरत से सन्दर्भित नंदीग्राम रो संत तथा दूसरा सुदामा चरित्र है। इनमें 76-76 पद हैं। इनमें मध्यकालीन कवियों का 16 मात्रा का मात्रिक छन्द प्रयुक्त हुआ है जिसका पहला तथा तीसरा और दूसरा तथा चौथा चरण तुकांत लिये है। वर्णन में वयण सगाई तथा उसके भेदों का मुहावरों के साथ बड़ा सटीक उपयोग देखने को मिला है।

'नंदीग्राम रो संत' में रामचरित के उपेक्षित पात्र भरत का वर्णन द्रष्टव्य है। इसमें मुख्यत: तीन प्रसंग उभारे गये हैं जिनको अन्य कवियों ने छोड़ दिया है। उनमें भरत अपने माता-पिता के साथ चित्रकूट में राम को मनाने जाते हैं तब अज्ञानवश लक्ष्मण भरत को कुछ कटु वचन कह देते हैं किन्तु मुनिवेश में राम-सीता से भेंट कर भरत लक्ष्मण को उनकी सेवा के लिए बड़भागी का सम्बोधन देते हैं। यथा-

गले लगाय कहे भरत भाई
बड़भागी थूं लखण भाई
मळी राम चरण सेवा काई
सह सब भांत री अबखाई।। 31।।

दूसरा भरत की पत्नी मांडवी महलों में रहकर ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर पति-सेवा के लिए नंदीग्राम जाती है। तीसरा प्रसंग भरत की उस प्रतिज्ञा से है कि जब तक राम पुन: नहीं लौटेंगे, वे अयोध्या नहीं जायेंगे। इसीलिए श्रीराम की शोभायात्रा नंदीग्राम से निकली होनी चाहिये।

सुदामा चरित्र की कथा तो वही है जिसका वर्णन कवि नरोत्तमदास ने किया है। द्वारपाल द्वारा सुदामा के आने की खबर सुनते ही कृष्ण सबकुछ छोड़ अपने मित्र के स्वागत को चल पड़ते हैं-

हरि दौड़े, महलां में खल़बल़
हरि दौड़े, चारुं दिश हलचल।
हरि दौड़े, शेष धुनि फणफण
हरि दौड़े, त्रिलोक में चळबळ।। 28।।

कृष्ण अपने सखा को महलों में ले जाकर जिस ढंग से स्वागत करते हैं, उसका वर्णन नरोत्तमदास 'पानी परात को हाथ छुओ नहीं, नैनन के जल से पग धोये' कहकर करते हैं वहां साकरियाजी की ये पंक्तियां द्रष्टव्य हैं-

रजत परात, रजत री झारी
राणी रूकमण कूड़े पाणी।
टूवाल ले सतभामा ऊभा
धोवे चरण किसन जुग पाणी।। 35।।
हरखत देव पुसब वरसावे
किन्नर गंधरव नाचे गावे।
मृदंग मंजीरा ढोलक बाजे
सब जन मिळने मोद मनावे।। 36।।

कृष्ण अपने पूरे महल में घूमा-घूमा कर सुदामा को कोना-कोना दिखाते हैं-

ओ रंग महल, ओ शीश महल
आ सभा भवन, ओ क्रीड़ा गण।
ओ रनिवास, ओ सुवरण महल
फिर-फिर देखाड़े सैंग भवन।। 39।।
ओ नंर द्वार, जसोदा चौक
यसु वाटिका, देवकी हाट।
ओ गोपीकुंज, अतिथि भवन
मथुरा मारग, गोमती घाट।। 41।।

कहना नहीं होगा कि ये कृतियां अपने लघु आकार में होती हुईं भी विषय-वस्तु, वर्णन-शैली तथा संदेश-कथन में एक व्यापक दृष्टि लिये पाठकों के मन पर उदात्त असर करती हैं। राजस्थानी के पाठ्यक्रम में इनका समावेश छात्रों के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं मूल्यबोधक होगा।

मनीष साकरिया, सुविज्ञा प्रकाशन, पं. मगनीराम साकरिया शोध प्रतिष्ठान वल्लभ विद्यानगर गुजरात द्वारा प्रकाशित 40 पृष्ठीय इस कृति का मूल्य 50 रूपया है।

**- म. भा.**

# जिंक ने सेसा फुटबाल अकादमी को हराया

**उदयपुर।** जिंक फुटबाल अकादमी की टीम ने उदयपुर स्थित जावर स्टेडियम में खेले गए दोस्ताना मुकाबले में गोवा के सेसा फुटबाल अकादमी की टीम को 3-0 से हरा दिया। वेदांता फुटबाल की इन टीमों का सामना दो दिनों

के भीतर दूसरी बार हुआ। पहला हाफ गोलरहित बराबरी पर समाप्त हुआ। इसके बाद स्पोनजीत बर्मन ने संदीप मरांडी से मिले एक थ्रू पास पर गोल करते हुए जिंक फुटबाल का खाता खोला। इसके बाद जिंक फुटबाल अकादमी के सुभाष दामोर और संदीप मरांडी ने दूसरे हाफ में बेहतर खेल दिखाते हुए दो और गोल किये और अपनी टीम को 3-0 की बढ़त दिला दी।

इससे पूर्व खेले गए पहले मैच में जिंक फुटबाल अकादमी के खिलाड़ियों ने बेहतरीन खेल दिखाते हुए सेसा अकादमी को 5-1 से हराया था जिसमें अमन खान ने हैट्रिक लगाई थी। अमन ने पहले हाफ में अपनी हैट्रिक पूरी कर ली थी। अमन को हाल ही में प्री-सुब्रतो कप नेशनल्स के लिए राजस्थान के लिए खेलने का मौका मिला था। उल्लेखनीय है कि सेसा फुटबाल अकादमी की अंडर-16 टीम इन दिनों प्री-सीजन टूर पर जावर आई हुई है, जो जिंक फुटबाल अकादमी का बेस है।

सेसा फुटबाल अकादमी टीम के टीम मैनेजर जोआओ रोबेलो ने कहा कि इस खूबसूरत शहर में पहुंचने के साथ ही हमें नया अनुभव प्राप्त हुआ। हमारे खिलाड़ियों को प्री-सीजन एक्सपोजर की जरूरत थी और हम मेजबानी के लिए जिंक फुटबाल का धन्यवाद करते हैं। एफ-क्यूब तकनीक के साथ अब हम नए सिरे से अपनी फिटनेस और एसेसमेंट पर काम कर सकते हैं। यह इंफ्रास्टक्चर वर्ल्ड क्लास है और हम जिंक फुटबाल अकादमी को भविष्य के लिए शुभकामना देते हैं।

# सर्वनकुमार और हरदेवसिंह बने कैस्ट्रोल सुपर मेकैनिक के विजेता

**उदयपुर।** कैस्ट्रोल इंडिया द्वारा आयोजित भव्य फिनाले में सर्वनकुमार सुब्रमण्यम और हरदेवसिंह जडेजा कैस्ट्रोल सुपर मेकैनिक कॉन्टेस्ट

2019 के विजेता बने। सर्वनकुमार ने बाइक कैटेगरी में और हरदेवसिंह ने कार कैटेगरी में जीत हासिल की। के. जयवेल और किशोर कलल्पा गताड़े क्रमश: कार और बाइक कैटेगरी में उपविजेता रहे। कैस्ट्रोल इंडिया लि. में विपणन विभाग के वाइस प्रेसिडेन्ट केदार आप्टे ने विजेताओं को पुरस्कृत किया।

कैस्ट्रोल इंडिया लि. के प्रबंध निदेशक ओमर डोरमेन ने कहा कि कैस्ट्रोल सुपर मेकैनिक कॉन्टेस्ट के तीसरे संस्करण में देशभर से लगभग 1.27 लाख मेकैनिकों ने भाग लिया और उनमें से 40 फाइनल स्टेज में पहुँचे।

आशीष सहगल, चीफ ग्रोथ ऑफिसर, ज़ी इंटरटेनमेन्ट इंटरपाइजेस ने कहा कि सुपर मेकैनिक कॉन्टेस्ट के लिये कैस्ट्रोल इंडिया के साथ गठबंधन एक अच्छा अनुभव रहा। यह कार्यक्रम कार और बाइक मेकैनिकों की प्रतिभा को नेशनल टेलीविजन पर प्रस्तुत करता है। कैस्ट्रोल सुपर मेकैनिक का प्रसारण ज़ी नेटवर्क के विभिन्न चैनलों पर किया जाएगा। ज़ी न्यूज में टेलीविजन के चर्चित चेहरे रवि दुबे शो की मेजबानी करेंगे। एपिसोड्स का प्रसारण साप्ताहिक होगा और फिनाले इवेंट का प्रसारण अगस्त में किया जाएगा।

विजेता मेकैनिक सर्वनकुमार ने कहा कि कैस्ट्रोल सुपर मेकैनिक कॉन्टेस्ट में यह मुकाम पाने के लिये मुझे तीन वर्ष लगे। पिछले दो बार छोटी गलतियों के कारण मैं चूक गया, लेकिन इस बार मैंने कड़ी मेहनत की और एक बार में एक राउंड पर केन्द्रित रहा। कैस्ट्रोल इंडिया मेकैनिक समुदाय के लिये जो करता है, वह लाजवाब है।

# वरूण धवन रीबॉक के ब्रांड एम्बेसडर बने

**उदयपुर।** अग्रणी फिटनेस ब्रांड रीबॉक ने अभिनेता वरुण धवन को नया ब्रांड एम्बेसडर बनाने की घोषणा की है। रीबॉक ने हाल ही में कैटरीना कैफ को अपने ब्रांड एम्बेसडर के रूप में लेकर आया और अब रीबॉक परिवार में वरुण धवन के शामिल होने के साथ यह ब्रांड अभी भी फ्रंट फुट पर बना हुआ है।

रीबॉक के साथ सांझेदारी पर वरुण धवन ने कहा कि रीबॉक जैसे ब्रांड के साथ जुड़ने का अनुभव अद्भुत है। यह ब्रांड बिल्कुल मेरी तरह है। रीबॉक के प्रति मेरा लगाव फिटनेस एवं परफॉर्मेंस में हमारे विश्वास से प्रेरित है, जो मुझे रूढ़ियों से हटकर चुनौतियां स्वीकार करने और अपनी अलग पहचान को महत्व देने में समर्थ बनाता है। मैं इस ब्रांड के साथ अपनी मनोरंजक यात्रा शुरु करने के लिए उत्साहित हूँ, जो आज की पीढ़ी के लिए फिटनेस के क्षेत्र में नए आयाम पेश करेगी। सुनील गुप्ता, ब्रांड डायरेक्टर, रीबॉक इंडिया ने कहा कि हम रीबॉक के नए ब्रांड एम्बेसडर के रूप में वरुण धवन के साथ सहयोग पर उत्साहित हैं। फिटनेस प्रेमी होने के कारण वरुण इस ब्रांड का मूर्त रूप हैं।

# फेंफड़ों में छेद का सफल ऑपरेशन

**उदयपुर।** पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस), उमरड़ा में चिकित्सकों ने एक महिला के फेंफड़ों में छेद का दूरबीन विधि से सफल ऑपरेशन किया है जो संभाग में इस पद्धति द्वारा किया गया पहला सफल ऑपरेशन है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि गत दिनों चित्तौड़गढ़ निवासी 50 वर्षीय महिला को फेंफड़ों में मवाद की शिकायत पर पीआईएमएस में भर्ती कराया गया। जांच में पता चला कि मवाद फेंफड़ों से होते हुए झिल्ली तक पहुंच गया है। इसके ऑपरेशन के द्वारा छाती में नली डाली गई लेकिन फेंफड़ों में छेद के चलते नली निकालना संभव नहीं था। इस तरह की स्थिति में या तो छाती में नली महिनों तक रखनी होती या फेंफड़े का कुछ हिस्सा मेजर सर्जरी द्वारा काट कर निकाला जाता। ये दोनों ही उपचार मरीज के लिए बहुत तकलीफ देय होते लेकिन पीआईएमएस में मरीज की दूरबीन पद्धति से जांच कर फेंफड़े में छेद का पता लगाया गया और मरीज का कुछ मात्रा में खून इस्तेमाल किया गया। इससे फेंफड़ों में रिसाव तुरंत बंद हो गया। अगले दिन मरीज की छाती से नली निकाल कर उसे छुट्टी दे दी गई। मरीज अब पूर्णतया स्वस्थ है।

# पीआईएमएस के डॉ. सामर सम्मानित

**उदयपुर।** महाराणा कुंभा सभागार, उदयपुर में आयोजित विश्व जनसंख्या दिवस 2019 पर पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडीकल साइंसेज, उमरड़ा (पीआईएमएस) के सर्जन डॉ. एस. के. सामर को सम्मानित किया गया।

डॉ. सामर को यह सम्मान चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, राजस्थान सरकार उदयपुर के क्षेत्रीय कार्यक्रम में जनसंख्या स्थिरीकरण, मातृ षिषु एवं परिवार कल्याण सेवाओं में वर्श 2018-2019 में की गई उल्लेखनीय उपलब्धि व उत्कृष्ट सेवाओं के लिए प्रदान किया गया। पीआईएमएस में स्वास्थ्य परिवार कल्याण एवं जननी सुरक्षा योजना के अन्तर्गत अब तक 5412 ऑपरेशन सफलतापूर्वक किये जा चुके हैं जो कि निजी संस्थानों में सर्वाधिक है। गत वर्ष भी उक्त सेवाओं के लिए डॉ. सामर को निजी संस्थानों में राज्यस्तर पर जयपुर में आयोजित कार्यक्रम में सम्मानित किया गया था।

# टेक्नो मोबाइल का फैंटम9 लॉन्च

**उदयपुर।** ग्लोबल प्रीमियम स्मार्टफोन ब्रांड टेक्नो मोबाइल ने ग्लोबल फ्लैगशिप 'फैंटम9' के लॉन्च के साथ ही ई- कॉमर्स स्पेस में उतरने की घोषणा कर दी है। फैंटम9 फ्लिपकार्ट इंडिया पर 14999 रुपए कीमत पर 17 जुलाई से उपलब्ध होगा। अंदाज ऐरोसिटी में आयोजित ग्लोबल पार्टनर समिट के दौरान, प्रीमियम मोबाईल फोन ब्रांड टेक्नो मोबाइल और प्रीमियर लीग मैन्चेस्टर सिटी के बीच 'रिन्यूड मल्टी ईयर ग्लोबल पार्टनरशिप' का लाइव हस्ताक्षर समारोह संपन्न हुआ। दोनों ब्रांड के प्रतिनिधियों ने 60 दिनों तक चलनेवाले 'टेक्नो रेस टू मैन्चेस्टर सिटी चैलेंज' चैलेंज के शुरु होने का जश्न भी मनाया, जो 7 सितंबर तक चलेगा।

मारको मा, चीफ ऑपरेटिंग ऑफीसर, ट्रांसियॉन इंडिया ने कहा कि दुनियाभर में टेक्नो के पोर्टफोलियो में तीन प्रमुख सीरीज़ है - 'स्पार्क' युवाओं के लिए एआइ ब्राइट कैमरा (खासतौर पर कम रोशनीवाले वातावरण के लिए जबरदस्त कैमरा फीचर्स), 'कैमॅन' बेहतरीन सेल्फी कैमरा फीचर्स वाली लोकपिय कैमरा आधारित सीरीज़ और ब्रांड की सबसे प्रमुख सीरीज़ 'फैंटम'। 'टेक्नो फैंटम9' में स्टाईल और परफॉर्मेंस का सबसे सही संतुलन है।

# न्युवोको करेगा उत्पादों का विस्तार

**उदयपुर।** निमार्ण सामग्री की अग्रणी निर्माता कंपनी न्युवोको विस्तास कॉर्प लि. ने बाजार में अपना विस्तार करने और अपने उत्पादों को और अधिक मजबूती देने के लिए पूर्वी उत्तरप्रदेश में योजना बनाई है। बाजार की जरूरतों को पूरा करने के लिए कंपनी 'सुपरसेट तकनीक' वाले ड्यूरागार्ड एक्स्ट्रा सीमेंट उत्पाद के दम पर प्रीमियम सेगमंट को उपलब्ध करायेगा। यह कंक्रीट की शक्ति और उसके टिकाऊपन के बीच संतुलन साधते हुए उत्पाद को बेजोड़ बनाता है।

# एचडीएफसी बैंक एवं सीएससी द्वारा मनी बैंक क्रेडिट कार्ड लॉन्च

**उदयपुर।** एचडीएफसी बैंक एवं भारत सरकार के कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) एसपीवी ने को-ब्रांडेड स्मॉल बिज़नेस मनीबैक क्रेडिट कार्ड लॉन्च किया। यह अपनी तरह का अलग क्रेडिट कार्ड है और खास सीएससी विलेज़ लेवल इंटरप्रेन्योर्स (वीएलई) एवं वीएलई-सोर्स्ड ग्राहकों के लिए डिज़ाईन किया गया है। यह यूज़र्स को अपने दैनिक व्यापारिक खर्चों के लिए आसान क्रेडिट उपलब्ध कराएगा। यह कार्ड एचडीएफसी बैंक के मैनेजिंग डायरेक्टर आदित्य पुरी और सीएससी के सीईओ दिनेश कुमार त्यागी द्वारा लॉन्च किया गया।

यह लॉन्च वीएलई के लिए सीएससी एसपीवी द्वारा आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में किया गया, जो नई दिल्ली के सीरी फोर्ट ऑडिटोरियम में सीएससी दिवस के अवसर पर आयोजित हुई थी। यहां कुछ महिला वीएलई को व्यक्तिगत कार्ड प्रदान किए गए। इस कार्यशाला में एचडीएफसी बैंक ने भी हिस्सा लिया और श्री पुरी ने लगभग 2,000 महिला वीएलई को संबोधित किया।

मिस स्मिता भगत, हेड- गवर्नमेंट एवं इंस्टीट्यूशनल बिज़नेस और ई-कॉमर्स, एचडीएफसी बैंक ने कहा कि हमें इस आयोजन में शामिल होकर एवं महिला वीएलई को सशक्त बनाकर बहुत खुशी हो रही है। हमने इस प्रतिबद्धता के तहत स्मॉल बिज़नेस मनीबैक क्रेडिट कार्ड लॉन्च किए। हमारा प्रयास है कि हम ग्रामीण भारत की संपन्नता बढ़ाने पर केंद्रित रहकर सभी क्षेत्रों तक अपनी सेवाएं पहुंचाएं।

# ठाकुरजी निकले नगर भ्रमण

जगन्नाथपुरी की तर्ज पर 'हाथी घोड़ा पालकी-जय कन्हैयालाल की' के जयघोष के साथ जगदीश मन्दिर से पारम्परिक प्राचीन लकड़ी के छोटे रथ से

ठाकुरजी को मन्दिर की परिक्रमा कराने के बाद रजत रथ पर बिराजमान कराया गया। आरती तथा बंदूकों की सलामी के साथ मुख्य रथयात्रा का शुभारम्भ मेवाड़ राजपरिवार के सदस्यों ने रथ की रस्सी खींचकर किया।

रथयात्रा जगदीश चौक से रवाना होकर घंटाघर, बड़ा बाजार, भड़भूजा घाटी, भूपालवाड़ी, तीज का चौक, धानमण्डी, मार्शल चौराहा, आरएमवी, कालाजी गोराजी, समोर बाग, भट्टियानी चौहट्टा होते हुए देर रात को पुन: जगदीश चौक पहुंची जहां भगवान जगन्नाथ की महाआरती की गई।

**जगन्नाथपुरी मंदिर के रहस्य :**

- मन्दिर के पास हवा की दिशा हैरान करती है। समुद्री तटों पर हवा समुद्र से जमीन की तरफ चलती है लेकिन पुरी में हवा जमीन से समुद्र की तरफ चलती है।
- मन्दिर के शिखर की कोई छाया या परछाई कभी नहीं होती है।
- जगन्नाथ मन्दिर के ऊपर से कोई पक्षी उड़ता हुआ नहीं देखा गया। मन्दिर के ऊपर से विमान उड़ाना भी निषेध है।
- जगन्नाथ मन्दिर के रसोईघर को दुनिया का सबसे बड़ा रसोईघर माना जाता है। मान्यता है कि कितने भी श्रद्धालु आ जाएं, यहां अन्न कभी खत्म नहीं होता।
- मन्दिर की रसोई में प्रसाद पकाने के लिए सात बर्तन एक-दूसरे के ऊपर रखे जाते हैं। यह प्रसाद मिट्टी के बर्तनों में लकड़ी से पकाया जाता है। इस दौरान सबसे ऊपर रखे बर्तन का पकवान पहले पकता है फिर नीचे की तरफ से एक के बाद एक प्रसाद पकता जाता है।
- इस मन्दिर के शिखर पर लगे सुदर्शन चक्र को कहीं से भी देखें तो वह सीधा ही नजर आता है।
- मन्दिर के ऊपर लगा ध्वज हमेशा हवा की विपरीत दिशा में लहराता रहता है।
- मन्दिर में मूर्तियां काष्ठ की बनी हुई हैं। हर बारहवें वर्ष में ये नई बनाई जाती हैं लेकिन इनका आकार और रूप वही रहता है।
- मन्दिर सातवीं सदी में बनवाया गया, जो अब तक तीन बार खण्डित हुआ है। 1174 ईस्वी में महाराज अनंगभीम देव ने इसका जीर्णोद्धार करवाया।

**( जनसत्ता रविवारी, 7 जुलाई 2019 से साभार )**

मौसम की पहली बरसात पर उदयपुर से 15 किलोमीटर दूर कूकड़ेश्वरजी महादेव पर झरने का लुत्फ उठाते सर्वश्री शब्दांक, अभिनव, आयुष तथा आदित्य।

प्रख्यात कवि-सूत्रधार प्रकाश नागोरी (बीच में) के 64वें जन्म प्रवेश पर शब्द रंजन कार्यालय में 13 जुलाई को स्वागत-अभिनंदन के दौरान डॉ. तुक्तक एवं डॉ. महेंद्र भानावत।

इस अवसर पर श्री नागोरी ने कहा कि मैंने हर पल को बड़ी सार्थकता के साथ जिया है। जीवन में जो कुछ घटित होता है, वह विधि द्वारा संयोजित है। अत: सदैव सकारात्मक तथा स्वस्थ चित्त लिए समय की धार के अनुरूप निश्चिंत बने चलते रहो।

## इलेक्ट्रिफाइड वाहनों की श्रृंखला की योजना

**उदयपुर।** जगुआर लैण्ड रोवर ने कैसल ब्रोमविच, यूके स्थित उत्पादन संयंत्र में नये इलेक्ट्रिफाइड वाहनों की श्रृंखला के उत्पादन की योजना का खुलासा किया है। यह घोषणा वर्ष 2020 से सभी नये जगुआर और लैण्ड रोवर मॉडल्स के लिये ग्राहकों हेतु इलेक्ट्रिफाइड विकल्पों की पेशकश की कंपनी की प्रतिबद्धता के निर्वाह की दिशा में अगला महत्वपूर्ण कदम है। प्रोफेसर डॉ. रैल्फ स्पेथ, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जगुआर लैण्ड रोवर ने कहा कि परिवहन का भविष्य इलेक्ट्रिक है और एक दूरदर्शी ब्रिटिश कंपनी होने के नाते शून्य-उत्सर्जन वाहनों की अगली पीढ़ी को यूके में बनाने के लिये प्रतिबद्ध हैं।

## पहली महिला आईजी बनीं बिनिता ठाकुर

**उदयपुर।** सन् 1996 बैच की आईपीएस बिनिता ठाकुर को उदयपुर रेंज के आईजी पद पर लगाया गया है। ये उदयपुर रेंज की पहली महिला आईजी हैं। बिनिता ठाकुर का तबादला पुलिस मुख्यालय पुनर्गठन के आईजी पद से हुआ है। उन्होंने 8 जुलाई को पदभार ग्रहण किया।

## देवास 3-4 मेवाड़ की सबसे बड़ी जरूरत

**उदयपुर।** देवास प्रोजेक्ट-3 और 4 के लिए बजट को लेकर शहर विधायक गुलाबचन्द कटारिया और सांसद अर्जुनलाल मीणा ने दिल्ली में केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत से भेंट कर बताया कि उदयपुर की झीलों को साल भर भरा रखने और क्षेत्र में पेयजल संकट के स्थायी समाधान के इस प्रोजेक्ट का पूरा होना बहुत जरूरी है। एक बार 1100 करोड़ खर्च होने के बाद हमेशा ग्रेविटी से पानी उदयपुर की झीलों तक पहुंचता रहेगा जिससे पेयजल संकट का स्थायी समाधान हो सकेगा। बिसलपुर तक भी पानी पहुंचाया जा सकेगा।

## दो माह से कोमा में चल रही किशोरी का सफल उपचार

**उदयपुर।** पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस), उमरड़ा में चिकित्सकों ने दो माह से कोमा में चल रही बालिका का सफल उपचार किया है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि धोली बावड़ी, उदयपुर निवासी 15 वर्षीय आईशा खान को दो माह पहले तेज बुखार के चलते बेहोशी की तकलीफ हुई और वह कोमा में चली गई। इस पर परिजन उसे अहमदाबाद लेकर गए लेकिन बहुत दिनों के उपचार के बाद भी उसकी स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। ज्यादा पैसा खर्च होने पर आर्थिक रूप से कमजोर परिजन उसे कोमा की स्थिति में ही उदयपुर ले आए। कुछ समाजसेवी लोगों ने सोशल मीडिया के माध्यम से आईशा के निशुल्क उपचार की अपील की थी जिस पर संज्ञान लेते हुए पीआईएमएस हॉस्पिटल उमरड़ा ने उसके उपचार का जिम्मा लिया। न्यूरो सर्जन डॉ. अनुराग पटेरिया की देखरेख में दो माह कोमा में रहने वाली आईशा को सप्ताह भर में ही होश आ गया। अब आईशा अपने घर पर स्वास्थ्य लाभ ले रही है।

# बीएसडीयू ने किया युवाओं के कौशल विकास पर फोकस

**उदयपुर।** भारतीय स्किल डेवलपमेंट यूनिवर्सिटी (बीएसडीयू) ने कौशल विकास और भारत में इसकी जरूरत पर उदयपुर में सम्मेलन आयोजित किया।

प्रोवोस्ट, बीएसडीयू कर्नल रवि गोसाईं ने कहा कि हर संस्थान में प्रशिक्षित कर्मचारी की मांग है। आज की दुनिया कुछ पेशेवर कैरियर विकल्पों के इर्द-गिर्द घूम रही है, जो प्रबंधन की तुलना में प्रकृति से कार्यात्मक हैं, जैसे प्रबंधन, प्रशासनिक, लेखा, तकनीकी आदि। ऐसे कार्यात्मक क्षेत्रों में व्यावहारिक प्रशिक्षण कभी भी पूर्व निर्धारित नहीं होता है। हमने बीएसडीयू में प्रशिक्षण मॉड्यूल बनाए हैं जो छात्रों को हर तरह की मशीन लर्निंग और फंक्शन लर्निंग से गुजरने में सक्षम बनाते हैं। बी.वोक और एम. वोक जैसी कौशल की डिग्री भविष्य की डिग्री है क्योंकि ये सामान्य शिक्षा सामग्री के अलावा उनके द्वारा चुने गए कौशल क्षेत्रों में मजबूत कौशल ज्ञान और अनुभव रखने वाले स्नातक को जन्म देती है।

उनकी रोजगार क्षमता बेरोजगारी दर को कम करने में सहायक होगी।

कर्नल रवि गोसाई ने कहा कि हम आज के युवाओं में व्याप्त कौशल अंतर को मिटाने के लिए राज्य सरकार को अपने 'स्विस-ड्यूल-एजुकेशन-सिस्टम' के साथ सर्वोत्तम सलाह और समर्थन प्रदान करना चाहते हैं। हमने हाल ही में राजस्थान सरकार के लिए अपने सहयोग को बढ़ाया है।

उन्होंने कहा कि भारत सरकार वर्षों से रोजगार के कई मुद्दों पर काम कर रही है। इनमें से सबसे बड़ा मुद्दा नौकरी के अवसरों की कमी है। ऐसे में रोजगार बढ़ाने के लिए कई योजनाएं शुरू की गई हैं। ऐसी ही एक योजना है स्किल इंडिया, जिसके तहत युवाओं को कुशल रोजगार के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। क्षेत्रफल के लिहाज से सबसे बड़े राज्य राजस्थान में युवाओं के कौशल विकास के लिए विशाल क्षेत्र मौजूद है। ऐसे कई क्षेत्र हैं जैसे निर्माण कौशल, कृषि कौशल, मोटर वाहन कौशल, बढ़ई कौशल में छात्रों को नौकरी पाने में मदद कर सकते हैं। इन कौशल के लिए सबसे महत्वपूर्ण रूप से प्रशिक्षण के एक संगठित तरीके और ऐसे करियर के लिए संस्थानों के क्रेडिट के माध्यम से उचित सम्मान की आवश्यकता होती है।

सरकार की योजना के समर्थन में देश की पहली और एकमात्र कौशल-आधारित संस्था भारतीय स्किल डवलपमेंट यूनिवर्सिटी (बीएसडीयू) अपने स्विस ड्यूल-एजुकेशन सिस्टम के आधार पर कौशल प्रशिक्षण प्रदान करती है।

वर्ष 2016 में स्थापित, विश्वविद्यालय का दृष्टिकोण कौशल विकास के क्षेत्र में वैश्विक उत्कृष्टता उत्पन्न करना है ताकि भारतीय युवाओं की प्रतिभाओं के विकास के लिए अवसर, स्थान और गुंजाइश बनाई जा सके और उन्हें वैश्विक स्तर पर फिट बनाया जा सके। बीएसडीयू न केवल शैक्षणिक, बल्कि सरकार की योजनाओं को औद्योगिक समर्थन भी प्रदान कर रही है।

## सुमन अध्यक्ष मनोनीत

**उदयपुर।** तेरापंथ महिला मण्डल का वार्षिक अधिवेशन नाइयों की तलाई में हुआ जिसमें सर्वसम्मत्ति से सुमन डागलिया को अध्यक्ष मनोनीत किया गया। यह जानकारी अध्यक्ष लक्ष्मी कोठारी ने दी।

# द लीला पैलेस उदयपुर को विश्व की सर्वश्रेष्ठ होटल का खिताब

**उदयपुर।** न्यूयार्क की विश्व प्रसिद्ध ट्रेवल मैग्जीन 'ट्रेवल+लेजर' ने वर्ष 2019 के बेस्ट होटल्स एंड रिसोर्ट्स अवार्ड्स की बहुप्रतीक्षित सूची जारी कर दी है। सूची में दुनिया की बेस्ट-100 होटल्स में नम्बर-1 का खिताब उदयपुर की फाइव स्टार लग्जरी होटल एंड रिसोर्ट 'द लीला पैलेस उदयपुर' को दिया गया है। यह जानकारी शुक्रवार को आयोजित प्रेसवार्ता में द लीला पैलसे उदयपुर के जनरल मैनेजर राजेश नाम्बी, कमर्शियल एंड हैड लाइजनिंग दिनेशन नायर और उप महाप्रबंधक प्रतीक स्वरूप ने दी। इस अवसर पर ट्रेनिंग मैनेजर मनीष राणावत, सेक्यूरिटी और लाइजन मैनेजर विक्रमसिंह चौहान तथा एचआर मैनेजर खाजाराम भादुरी भी उपस्थित थे।

राजेश नाम्बी ने बताया कि इस अवार्ड की घोषणा के बाद दुनिया के पर्यटन नक्शे में एक बार फिर उदयपुर का नाम शीर्ष पर आ गया है। यही नहीं 'टॉप-10 होटल्स इन एशिया' केटेगरी में भी तीसरे स्थान पर द लीला पैलेस न्यू देहली और दसवें स्थान पर द लीला पैलसे बेंगलुरु का चयन किया गया है। टॉप रिसोर्ट्स इन एशिया केटेगरी में भी द लीला पैलेस उदयपुर ने पहला स्थान प्राप्त किया है। दुनिया के टॉप 25 ब्रांड्स में द लीला पैलेस ग्रुप को भी शामिल किया गया है।

दिनेशन नायर ने बताया कि 'ट्रेवल+लेजर' हर साल अपने पाठकों के सर्वे के आधार पर पूरे विश्व की बेस्ट होटल्स एंड रिसोर्ट्स का चयन करती है तथा उन्हें अवार्ड से सम्मानित भी करती है। यह सर्वे इन होटल्स और रिसोर्ट की लोकेशन, वहां दी जाने वाली सुविधाएं, सेवाएं, भोजन एवं ओवरआल वेल्यूज़ के आधार पर होता है। इस सर्वे को विश्वभर के पर्यटन जगत में बहुत ही सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। बेस्ट होटल्स एंड रिसोर्ट्स की श्रेणी में ही दुनियाभर से लाखों आवेदन आते हैं और ऐसे में उदयपुर की द लीला पैलेस को यह सम्मान मिलना गर्व का विषय है। न्यूयार्क में आयोजित अवार्ड समारोह में लीला ग्रुप के प्रेसिडेंट राजीव कौल ने यह सम्मान ग्रहण किया।

यह पुरस्कार मिलने से उदयपुर की होटल इंडस्ट्री और पर्यटन जगत को खूब बूस्ट अप मिलेगा। इस सर्वे के आधार पर ही विश्वभर में पर्यटन उद्योग यह टॉप डेस्टिनेशन तय करता है। उदयपुर के नंबर-1 आने से शहर को विश्व स्तर पर नाम और सम्मान तो मिलेगा ही, यहां पर अमेरिका, यूरोप सहित विश्वभर से आने वाले पर्यटकों की संख्या में भी इजाफा होगा। एक और खास बात यह है कि इस सर्वे में उदयपुर शहर को दुनिया में दसवां सबसे खूबसूरत पर्यटन शहर व एशिया में छठा सबसे खूबसूरत शहर का खिताब दिया गया है।

द लीला पैलसे उदयपुर के जनरल मैनेजर राजेश नाम्बी, कमर्शियल एंड हैड लाइजनिंग दिनेशन नायर और उप महाप्रबंधक प्रतीक स्वरूप ने इस खिताब का श्रेय होटल में आने वाले पर्यटकों को दिया है जिन्होंने अपने व्यूज में इसे सर्वश्रेष्ठ बताया। पीछोला झील किनारे स्थित इस होटल एंड रिसोर्ट को दुनिया भर के पर्यटकों ने सराहा है।

**न्यूयार्क की विश्व प्रसिद्ध ट्रेवल मैग्जीन 'ट्रेवल+लेजर' पाठकों के सर्वे के आधार पर पूरे विश्व की बेस्ट होटल्स एंड रिसोर्ट्स का चयन करती है। यह सर्वे होटल्स और रिसोर्ट की लोकेशन, वहां दी जाने वाली सुविधाएं, सेवाएं, भोजन एवं ओवरआल वेल्यूज़ के आधार पर होता है। इसके लिए दुनियाभर से लाखों आवेदन आते हैं।**

**ऐसे में उदयपुर की द लीला पैलेस को यह सम्मान मिलना गर्व का विषय है। इससे होटल इंडस्ट्री और पर्यटन जगत को खूब बूस्ट अप मिलेगा। उदयपुर को विश्व स्तर पर नाम और सम्मान तो मिलेगा ही, यहां पर अमेरिका, यूरोप सहित विश्वभर से आने वाले पर्यटकों की संख्या में भी इजाफा होगा। इस सर्वे में उदयपुर शहर को दुनिया में दसवां सबसे खूबसूरत पर्यटन शहर व एशिया में छठा सबसे खूबसूरत शहर का खिताब दिया गया है।**

**प्रबंध मंडल द्वारा इस खिताब का असली श्रेय होटल में आने वाले उन पर्यटकों को दिया है जिन्होंने अपने व्यूज में इसे सर्वश्रेष्ठ बताया। पीछोला झील किनारे स्थित द लीला पैलेस को दुनिया भर के पर्यटकों ने सराहा है।**

# आइए, चुगली खाएं....

**- डॉ. देवेन्द्र इन्द्रेश-**

जब खाने को कुछ न बचे तो चुगली खाएं। हालांकि इस देश में इतना खाते हैं कि पेट फटने तक की स्थिति में पहुंच जाता है। यहां तक कि डकार लेने तक की स्थिति में भी नहीं रहते। खाने के नाम पर केवल खाने में ही विकास हो रहा है। जब सब कुछ खा चुके होते हैं तो चुगली खाना शुरू कर देते हैं।

अच्छी आदतों का आज के इस स्वर्णिम काल में अकाल सा पड़ गया है। देश जिस गति से विकास कर रहा है, उससे तो यही लगता है कि इस समय देश में बुरी आदतें पल्लवित तथा पुष्पित हो रही हैं। वे निरन्तर अमर बेल की तरह बढ़ रही हैं। जो नर पुंगव इन आदतों को अंगीकार कर लेते हैं, वही श्रेष्ठ मानव शिरोमणि का खिताब प्राप्त कर लेते हैं, क्योंकि आज के युग में हर सफल आदमी के पीछे इस दूषित मनोवृत्ति का ही हाथ होता है।

खैर, बात खाने की करें तो इस समय देश में बहुत कुछ खाने को है। देश का कोई कोना ऐसा नहीं है जहां खाने को ना मिलता हो। बस खाने वाला चाहिये। जब खाते-खाते टैं बोलने लगे तो चुगली खाना शुरू कर दीजिये। चुगली खाने में भी वही आनन्द आता है जो रसगुल्ला गटकने में आता है। लोग कहते हैं कि आजकल जितनी भी महान आदतें हैं उनका मिलाजुला संस्करण चुगली खाना है। जब आदमी देश का सब कुछ खा जाता है तो सौंफ इलायची की तरह चुगली खाता है।

यह 'चुगली' है क्या? यह भी गुगली गेंद की तरह विस्फोट करने वाली असरदार मनोवैज्ञानिक चीज है। किसी के बारे में किसी की झूठी-सच्ची, एक की दो लगाकर बातों को किसी अन्य के सामने नमक-मिर्च लगाकर परोस देना चुगलखोरी की श्रेणी में आता है। इस धराधाम पर परम पद हथियाने के लिए चुगलखोरी रामबाण औषधि है। अगर आप इस लोक में कुछ पाना चाहते हैं तो किसी की चुगली कर डालो। चुगली खाने से वह सब अनायास ही सुलभ हो जाता है जो कठोर परिश्रम से भी नहीं मिलता है। जब चुगली खाने से सब कुछ मिल सकता है तो यह पुण्य कार्य करने में हर्ज कैसा? ईश्वर ने हमें भेजा ही इसलिए है कि हम कुछ पुण्य कार्य करें और परम पद प्राप्त करें।

वर्तमान युग में यदि सुख से जीना है तो चुगली खाइये। इमली खाने में जो चटकारा लगता है, उससे कहीं अधिक चटकारा चुगली खाने में लगता है। आप माने या न माने मुझे ऐसा कोई माई का लाल या लाली दिखाई नहीं देती जो चुगली नहीं खाती हो या खाता हो। लालियां तो कुछ अधिक ही चुगली का चटकारा लेती हैं। जैसे जानवर अपना हाजमा दुरूस्त करने के लिए जुगाली करते हैं, ठीक वैसे ही धराधाम की इस पवित्र माटी की पवित्र आत्माएं अपनी रोटी पचाने के लिए चुगली करती हैं।

चुगली खाना एक महत्त्वपूर्ण कार्य माना जाता है। इस महत्त्वपूर्ण कार्य को सब अपनी योग्यता एवं काईंपांपने के अनुसार अपने-अपने ढंग से करते हैं। कुछ तो ऐसे स्वनामध्न्य इस माटी में लोट लगा रहे हैं जिनकी यह हार्दिक इच्छा रहती है कि रोटी खाने को भले ही ना मिले, चुगली खाने को बराबर मिलती रहे। वे इस पृथ्वी पर रोटी खाए बिना तो जी सकते हैं, लेकिन चुगली खाएं बिना एक क्षण भी नहीं जी सकते। जैसे शेर आदमी को खाकर आदमखोर हो जाता है, वैसे ही मनुष्य चुगली खाते-खाते चुगलखोर हो जाता है।

चुगली खाने का सभी का अपना अलग-अलग ढंग होता है। जिनको चुगली खाने में महारथ हासिल होती है, वे चुगली भी खा लेते हैं और अपना काम भी बना लेते हैं और कुछ ऐसे लल्लू होते हैं जो चुगली खाते हुए रंगे हाथ पकड़ लिए जाते हैं। तब उनकी ऐसी ताजपोशी होती है कि उन्हें अपनी नानी याद आ जाती है। फिर भी वे चुगली खाने से बाज नहीं आते। क्योंकि वे जानते हैं कि जीवन जीने का उनका यह तरीका उनको राजनीति के परम पद पर पहुंचा देगा।

इन चुगल महान नर पुंगवों ने चुगल विद्या में महारथ हासिल कर ली है। इन्होंने मारक चुगल मंत्रों का जिस-जिस पर प्रयोग किया है, वह सांसारिक कष्टों को भोगता हुआ शीघ्र ही परलोक पलायन कर गया लेकिन इनके पास ऐसे भी सर्व सिद्धिदायक चुगल मंत्र हैं जो अचूक हैं। इनके प्रयोग से आठों सिद्धियां एवं नौ निधियां हाथ जोड़ खड़ी रहती हैं।

अगर आप इस चुगल मंत्र का सिद्धि दायक प्रयोग करना चाहें तो अवश्य कीजिये, क्योंकि चुगली खाना ही हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।